https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

प्रसिद्ध सचित्र

भारतीय पौराणिक कथाएं

MAPLE KIDS

Novels English & Hindi

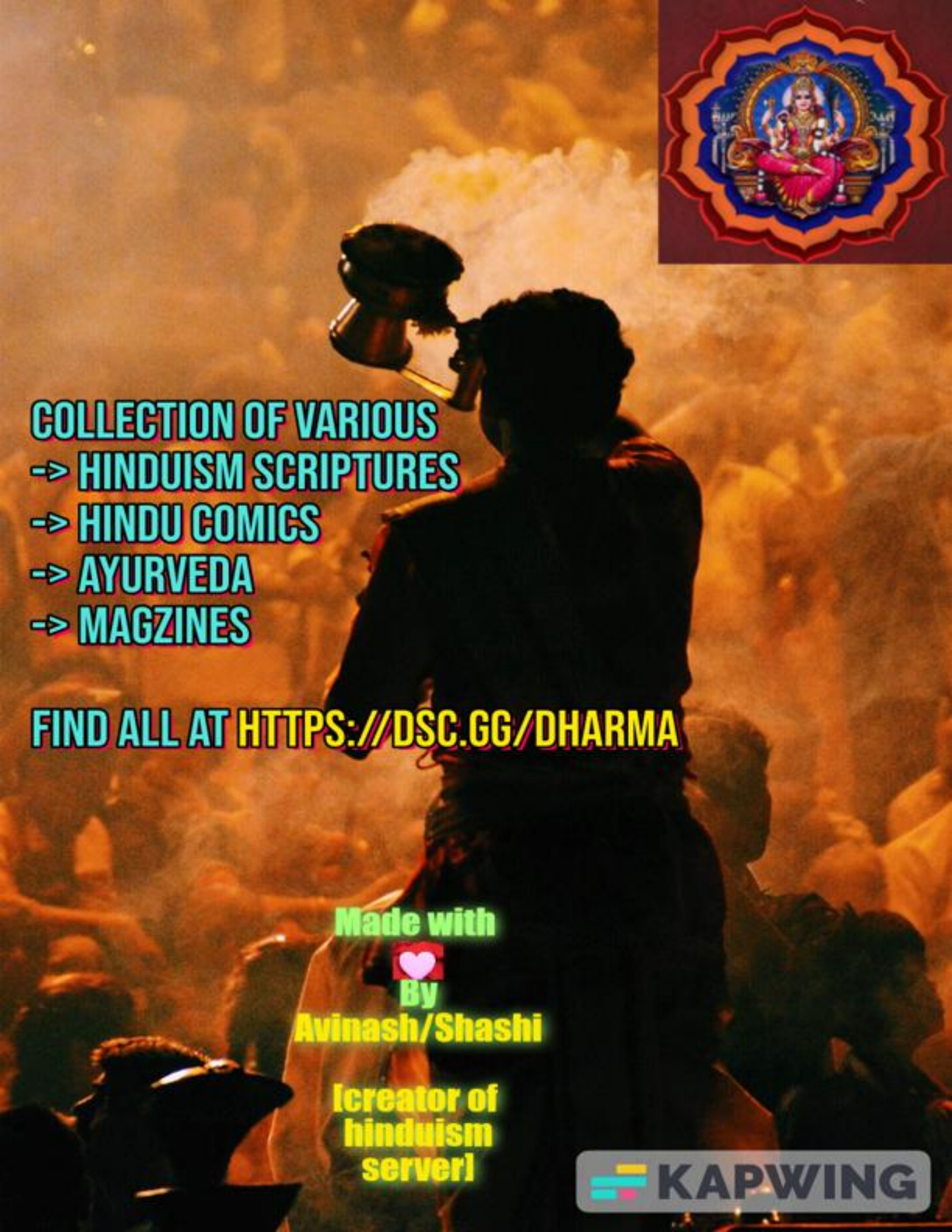
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

प्रसिद्ध सचित्र

भारतीय पौराणिक कथाएं

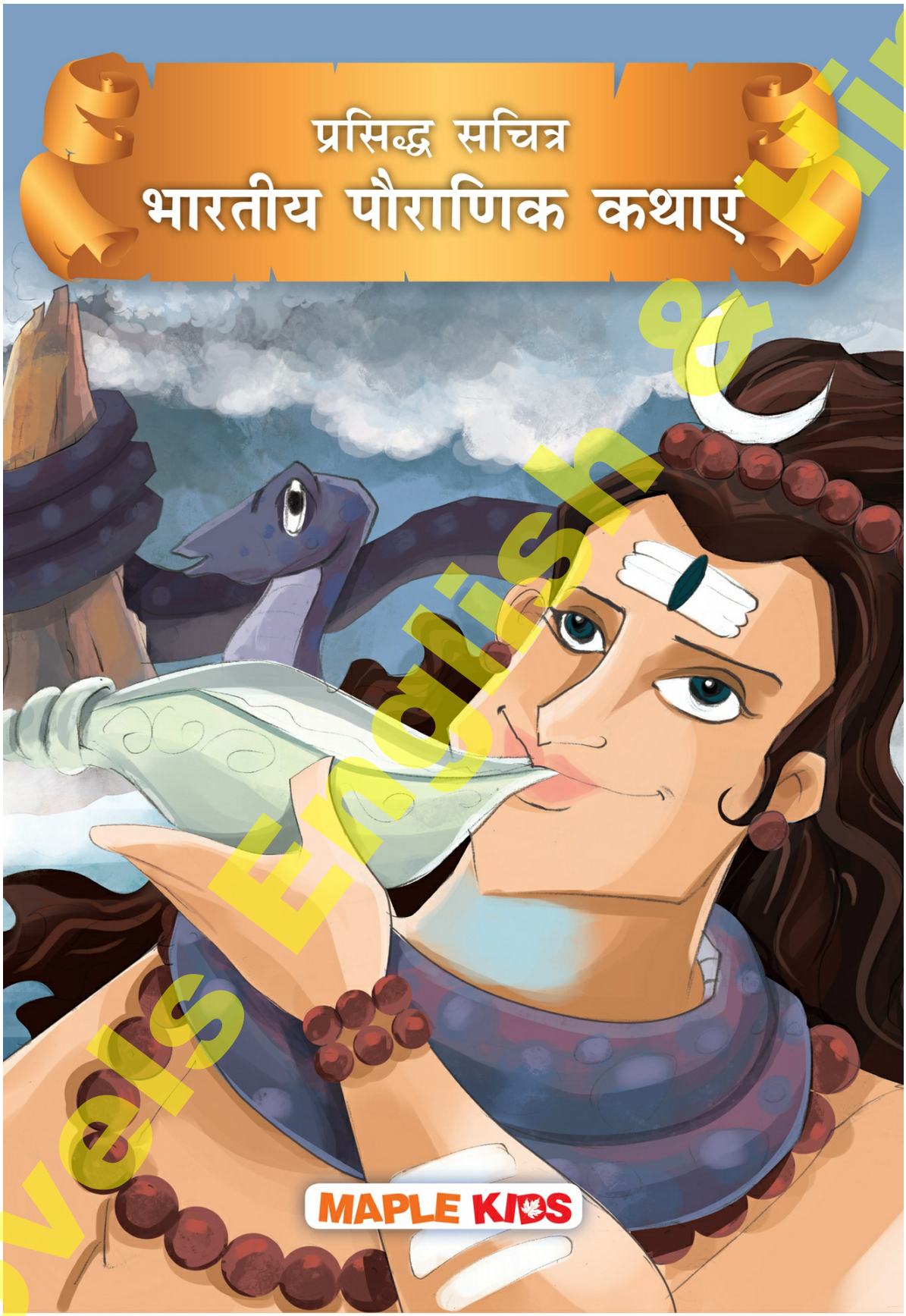

MAPLE KIDS

Novels English & Hindi

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

प्रसिद्ध सचित्र भारतीय पौराणिक कथाएं

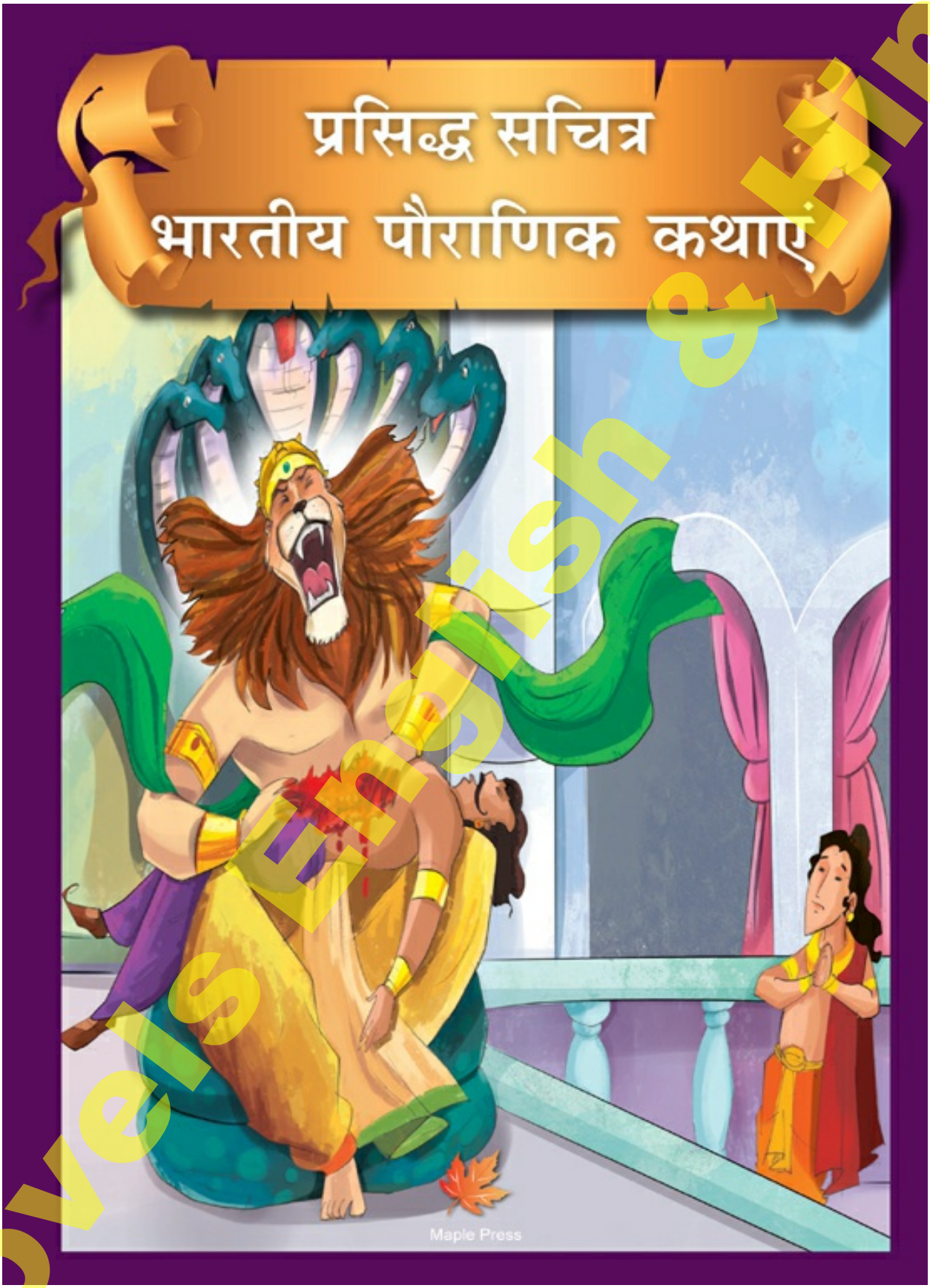

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

प्रसिद्ध

सचित्र

भारतीय पौराणिक कथाएं

Maple Press

Novels English & Hindi

Hinduism Discord Server https://dsc.gg/dharma | MADE WITH LOVE BY Avinash/Shashi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Published by

Maple Press Pvt. Ltd.
A-63, Sector-58, Noida (UP) 201 301, India
Tel. : (0120) 4553581, 4553583

Email: info@maplepress.co.in
Website: www.maplepress.co.in

Edition: 2015
Copyright © Maple Press

ALL RIGHTS RESERVED. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.

Printed by Artxel, Noida

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

विषय-सूची

1. राजा मनु और मछली
2. अमरता का अमृत
3. वराह अवतार
4. नरसिम्हा अवतार
5. सावित्री और सत्यवान
6. साहसी राजकुमार ध्रुव
7. भस्मासुर
8. कृष्ण का जन्म
9. कृष्ण और गोवर्धन पर्वत
10. सुदामा
11. अर्जुन का निशाना
12. एकलव्य
13. कठोर शपथ
14. राजा हरिशचन्द्र
15. सागर का मंथन

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

This Book is requested from Request Hoarder

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राजा मनु और मछली

कई वर्ष पहले, मनु नामक एक महान राजा ने धरती पर शासन किया था। ऐसा कहा जाता है कि वह धरती के पहले शासक थे। वह एक ज्ञानी पुरुष और पुण्य के प्रति समर्पित इंसान थे। राजा मनु हजारों साल तक गंभीर तपस्या में लगे हुए थे। एक दिन वह अपने महल के समीप स्थित नदी में पूजा करने गये तभी गलती से उनके हाथ में पानी के साथ एक छोटी मछली भी आ गई। राजा उस मछली को दुबारा नदी में छोड़ने ही वाले थे, तभी मछली ने कहा "हे महान राजा, मुझे दूर नहीं फेंके। मुझे अपने साथ रखें। मैं एक दिन आपकी मदद जरूर करूंगी।"

मछली के अनुरोध से राजा बहुत खुश हो गये और उस मछली को महल ले आये। राजा ने उस छोटी मछली को एक बर्तन में रख दिया। लेकिन एक दिन राजा ने देखा कि मछली उस बर्तन में घूमने में असमर्थ थी। वह इतनी बड़ी हो गई थी कि उस बर्तन में खाली जगह भी नहीं बची थी, जिससे मछली बहुत दुःखी थी। इसलिए राजा ने उस मछली पर दया करते हुए, उसे एक बड़े से कुंड में स्थानांतरित कर दिया। कुछ दिनों के लिए वह मछली उस कुंड में खुशीपूर्वक रही, परन्तु फिर उसका आकार इतना बढ़ा कि वह कुंड में भी समा नहीं सकी।

तब राजा ने मछली को झील में डलवा दिया। इससे उस मछली की खुशी की कोई सीमा नहीं रही। वह झील में कूदती और खेलती थी। लेकिन कुछ दिनों में ही मछली का आकार इतना बढ़ गया कि झील भी उसके लिए छोटी पड़ने लगी थी। जब राजा उस मछली को देखने गये, तो उसे उदास देखकर वे चौंक गये। इसलिए उन्होने मछली को झील से नदी में स्थानांतरित करने के लिए कुछ लोगों की व्यवस्था की। परन्तु कुछ ही दिनों में नदी भी उस मछली के लिए छोटी साबित हुई।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तब राजा को एहसास हुआ कि वह कोई साधारण मछली नहीं है। उन्होंने मछली के आगे सिर झुकाया और कहा "अब मुझे समझ आया कि आप कोई साधारण मछली नहीं बल्कि भगवान हैं। मुझे आशीर्वाद दीजिये कि मैं अपने राज्य को न्याय और ज्ञानपूर्वक चला सकूं। हमें आशीर्वाद दीजिए कि हमारे देश में हमेशा शांति बनी रहे।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मछली ने कहा "हे महान राजा, मैं आप की सेवा से संतुष्ट हूं। मैं आपको सावधान करने आयी हूं कि कुछ ही दिनों में भरी बारिश शुरू हो जाएगी। यह बारिश सात दिनों तक जारी रहेगी, जिसके कारण एक विशाल बाढ़ आएगी और पूरी धरती डूब जाएगी। आपको एक बड़े जहाज का निर्माण करना होगा, जिसको सभी अच्छे लोग, जानकार और हर प्रकार के पेड़ पौधों के समूह से भरना होगा।"

इस प्रकार की भविष्यवाणी ने राजा मनु को हैरान कर दिया। उन्होने कुछ नहीं कहा बल्कि उस मछली की आज्ञा का पालन करने का फैसला किया। उन्होने तुरंत एक विशाल जहाज के निर्माण की और उसे सभी प्रकार के जानवरों, पौधों और अच्छे लोगों से भर दिया। जब बारिश शुरू हुई तब पूरी धरती समुद्र से डूब गई, पर वह अपने जहाज में सवार थे।

सात दिनों तक भारी बारिश होती रही और वह सभी तूफान में ही वहां से रवाना हुए। लेकिन जहाज डूबा नहीं था। क्या आप जानते हैं ऐसा क्यों हुआ? क्योंकि वह विशाल मछली उस जहाज को अपनी पीठ पर संभालकर ले जा रही थी। यह विशाल मछली भगवान विष्णु का मत्स्य अवतार थी।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

जब वर्षा बंद हुई और बाढ़ खत्म हुई, तब राजा मनु का जहाज तट पर आया और जहाज पर उपस्थित सभी जानवर,पौधे और अच्छे लोग बच गए। उन सभी के साथ मिलकर राजा मनु ने एक नया राज्य बनाया और एक नए युग की शुरुआत की।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अमरता का अमृत

दानव और देवता जब इस बात पर लड़ रहे थे कि किसे अमरता के अमृत का बड़ा हिस्सा मिलना चाहिए, तब भगवान विष्णु ने सोचा कि "यदि दानव अमृत पीकर अमर हो जायेंगे, तब वह पृथ्वी और स्वर्ग पर रहने वाले लोगों के लिए लगातार मुसीबत बनते रहेंगे। फिर उन्हे रोकने का कोई रास्ता नहीं होगा। मुझे कुछ करना चाहिए, जिससे उन्हें अमृत पीने को नहीं मिले।"

भगवान विष्णु ने उसी समय एक मनमोहिनी युवती का रूप धारण किया और समुद्र से निकलते हुए अपने आस-पास खड़े देवताओं तथा दानवों की ओर मधुर मुसकुराहट फेंकते हुए चलने लगे। दानव और देवता उस सुंदर युवती को देखकर लड़ना भूल गए और आश्चर्यचकित होकर उसे देखने लगे। तभी आकाश में बिजली चमककर उस देवतुल्य सौन्दर्य को कदमों में जाकर समा गई।

उस युवती ने कहा, "मेरा नाम मोहिनी है।" उसकी आवाज गीत की तरह मधुर थी। अब देवताओं और दानवों ने यह समझा कि मोहिनी समुद्र मंथन से प्रकट हुई है। लड़ाई फिर से शुरू हो गई और अब यह लड़ाई इसलिए हुई कि मोहिनी को कौन अपने साथ रखेगा।

फिर मोहिनी ने कहा, "अगर आप सभी सहमत हों, तो मैं एक समाधान आप सबके सामने रखना चाहती हूं। इसके द्वारा दोनो दल मेरा और अमृत का आनंद ले सकते हैं।" मोहिनी इतनी आकर्षक थी कि शायद ही कोई देवता या दानव उसके प्रस्ताव को ठुकरा सकता था। उसने आगे कहा, "मुझे अमृत से भरी सुरही दे दीजिए और मैं आप सभी में इसे बराबर बांट दूंगी।" मोहिनी न तो देवता थी और न ही दैत्य या असुर थी, इसीलिए सभी ने यह भरोसा कर लिया कि वह निष्पक्ष रहेगी और सभी सहमत हो गए।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मोहिनी ने अमृत की सुराही को हाथ में लेकर नृत्य करना शुरू कर दिया। वह बहुत ही आकर्षक कलाकार थी। सभी देवता और दानव उसकी सुंदर चाल को देखकर दंग रह गए। वह अवाक होकर बैठ गए और मोहिनी को अमृत बांटते हुए देखते रहे।

उस चतुर युवती ने नृत्य करते हुए जादूई तरीके से अमृत की सुराही को पानी की सुराही से बदल दिया ताकि देवता असली सुराही से अमृत पी सके और दानव नकली सुराही से। इस प्रकार सभी देवता अमृत पीने के कारण अमर हो जाएंगे, जबकि दानवों को धोखा दिया गया, क्योंकि उन्होने अमृत की जगह पानी पिया था।

राहु नामक एक दानव को यह अनुभव हुआ कि क्या हो रहा है। इसीलिए मोहिनी द्वारा दानवों को दिए जा रहे धोखे की जांच करने के लिए उसने देवता का रूप धारण किया और सूर्य और चंद्रमा के बीच जाकर बैठ गया। मोहिनी को यह पता नहीं चला। वह नृत्य करते हुए राहु के पास गई तो उसे भी उसने अमृत दिया।

राहू ने अमृत का एक घूंट लिया और उसके संदेह की पुष्टि हो गई कि मोहिनी दानवों को अमृत की जगह पानी देकर धोखा दे रही थी। दूसरी तरफ सूर्य और चंद्रमा को यह एहसास हो गया कि राहु देवता नहीं बल्कि उनके भेष में दानव है। वह चीखे, "यह देवता नहीं बल्कि

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उनके भेष में एक दानव है। यह धोखा दे रहा है!"

इससे राहु क्रोधित हो गया। वह आकार में बढ़ने लगा। उसने अपना मुंह खोला और सूर्य और चंद्रमा को निगल लिया, क्योंकि उन्होने उसका भेद खोल दिया था। मोहिनी ने खुद को मूल अवतार में वापस परिवर्तित कर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया था। उस सुंदर युवती की जगह खुद भगवान विष्णु खड़े थे। तब भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से राहु का सर उसके शरीर से अलग कर दिया और उस दानव द्वारा निगले गए सूर्य और चंद्रमा को उसके गले से बाहर निकाला।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वराह अवतार

बहुत समय पहले, सृष्टि के आरम्भ में, भगवान ब्रह्मा जी ने चार बालकों की रचना की और उन्हें अनंत काल तक मानस ऋषि के रूप में रहने का वरदान दिया। इन चारों ऋषिगण के नाम सनक, सन्नदन, सनातन, और सनतकुमार थे। इन चार ऋषियों के पास अद्वितीय शक्तियां थीं। एक बार, इन सभी ने भगवान विष्णु के दर्शन करने का निर्णय लिया। अपने पिता भगवान ब्रह्मा से अनुमति और आशीर्वाद लेने के बाद, यह चारों ऋषि भगवान विष्णु के निवास स्थान बैकुंठ लोक के लिए चल पड़े। बैकुंठ लोक के सात द्वार हैं। इन चार ऋषियों ने छह द्वारों को पार कर लिया, लेकिन सातवें द्वार पर जय और विजय ने उन्हें रोक दिया।

मानस ऋषि होने के कारण सभी ने अपनी कमर पर ही वस्त्र धारण किये थे। जय और विजय ने उन सभी को यह कहते हुए अपमानित किया कि उन्होंने उचित वस्त्र भी नही पहने हैं। उन चारों ने जय और विजय को यह याद दिलाया कि वे ब्रह्मा के पुत्र हैं, परन्तु जय और विजय ने उनकी एक बात नहीं सुनी। उन्होंने बाल ऋषियों पर अशान्ति फैलाने का आरोप लगाया और वैकुंठ लोक से बाहर फेंकने की धमकी दी। उन चारों ऋषियों को बहुत अधिक क्रोध आया और उन्होंने जय और विजय को पृथ्वी पर राक्षसों के रूप में पैदा होने का श्राप दे दिया।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसी वक्त भगवान विष्णु, देवी लक्ष्मी के साथ प्रकट हुए। भगवान विष्णु ने कहा कि " आप दोनों का व्यवहार क्षमा योग्य नहीं है। इन ऋषियों ने पहले कभी किसी को श्राप नहीं दिया था, इसलिए इनके श्राप का प्रभाव बना रहेगा।"

तब जय और विजय, उन चार ऋषियों के पैरों मे गिर गये और दया की विनती करने लगे। ऋषियों ने कहा, "तुम्हारे श्राप हटाये नहीं जा सकते परन्तु तुम्हारा श्राप कम जरूर हो जाएगा। इसके लिए तुम्हारा जन्म पृथ्वी पर केवल तीन बार होगा और हर बार तुम्हारा अंत खुद भगवान विष्णु के द्वारा होगा। इस प्रकार तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी और तुम अपने निवास स्थान पर वापस आ जाओगे।"

इस प्रकार जय और विजय ने पृथ्वी पर दानव भाइयों हिरण्यकश्यप और हिरण्याक्ष के रूप में पहली बार जन्म लिया। ऐसा कहा जाता है कि जब उन्होंने जन्म लिया तब धरती और आकाश दोनों को हिला के रख दिया था। सभी देवता भयभीत हो गए थे कि यदि जन्म लेने पर यह इतने क्रूर हैं तो बड़े होने पर वह क्या करेंगे?

वर्ष बीतते गये और हिरण्याक्ष भगवान ब्रह्मा जी के भक्त के रूप में बड़ा होने लगा। हजारो सालों की कठिन तपस्या के लिए खुद को समर्पित करने के बाद उसके सामने ब्रह्मा जी

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

प्रकट हुए और उसे अपनी इच्छा का एक वरदान मांगने को कहा। हिरण्याक्ष ने कहा, "हे प्रभु, मुझे आशीर्वाद दें कि मैं कभी भी किसी मनुष्य, देवता या दानव के द्वारा मारा नहीं जा सकूं।" ब्रह्मा जी ने उसे वरदान दिया और चले गए।

इसके बाद दानव राजा हिरण्याक्ष ने एक ऐसे तानाशाह कि तरह शासन किया, जिसे दुनिया ने कभी नहीं देखा था। उसे अपनी अमरता पर इतना विश्वास था कि उसने पृथ्वी पर शान्ति को भंग करना शुरू कर दिया। सबसे पहले वह समुद्र के बीच में खड़ा हो गया और अपनी कमर को एक तरफ से दूसरी तरफ घूमने लगा। उसके इस प्रकार करने से समुद्र मंथन होने लगा जिसके कारण जल देवता वरुण को बहुत अधिक दुःख हुआ। जब वह प्रकट हुए तो हिरण्याक्ष ने वरुण को युद्ध के लिए ललकारा। हिरण्याक्ष को भगवान ब्रह्मा के द्वारा वरदान प्राप्त होने के कारण वरुण उसे पराजित भी नहीं कर सकते थे।

इसलिए वह भगवान विष्णु के पास मदद मांगने गए।

इस बीच वरुण के पराजित होने से हिरण्याक्ष का आत्मविश्वास कई गुना बढ़ गया। पाताललोक तक जाने के लिए उसने पृथ्वी को लिया और समुद्र में डुबोने लगा। इसके कारण सभी देवता चिंतित हो गये और वरुण देवता के साथ मिलकर मदद के लिये भगवान

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

विष्णु से प्रार्थना करने लगे।

तब भगवान विष्णु ने एक जंगली सुअर के रूप में अवतार लिया। उस जंगली सुअर ने हिरण्याक्ष को युद्ध के लिये चुनौती दी। अहंकार में डूबा हुआ हिरण्याक्ष सहमत हो गया। लेकिन वह भूल गया कि भगवान ब्रह्मा से मिले वरदान से वह केवल मनुष्य, देवता और दानव से ही जीत सकता है। भगवान ब्रह्मा के वरदान ने यहां काम नहीं किया, क्योंकि हिरण्याक्ष एक पशु से लड़ रहा था। इसलिए सुअर ने आसानी से हिरण्याक्ष को पराजित कर दिया और पृथ्वी को पाताललोक से वापस लाया।

हिरण्याक्ष का वध करने के लिये भगवान विष्णु द्वारा लिये गए इस अवतार को वरहावतार के नाम से जाना जाता है। इस प्रकार भगवान विष्णु के वरहावतार द्वारा हिरण्याक्ष का वध करने से द्वारपाल श्राप से मुक्त हुए।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

नरसिम्हा अवतार

हिरण्याक्ष के भाई हिरण्यकश्यप ने जब अपने भाई की मृत्यु की खबर सुनी तो वह क्रोध से भर उठा था । उसने भगवान विष्णु से प्रतिशोध लेने की कसम खाई थी। वह मन्द्राचल पर्वत पर जाकर एक पैर के अगुंठे पर खड़ा हो गया और सौ साल तक कठोर तपस्या की जब तक ब्रह्मा उसके सामने प्रकट नहीं हुए । ब्रह्मा ने कहा, "मैं तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हूं। तुम एक वरदान ले सकते हो ।"

हिरण्यकश्यप ने कहा, "भगवान, मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं किसी भी अस्त्र-शस्त्र द्वारा मारा नहीं जा सकूं। मेरी मृत्यु किसी भी मानव, पशु, दैत्य, असुर था देवता के द्वारा न हो सके । मेरी मृत्यु न दिन में हो न रात में हो, न घर के बाहर हो न घर के अंदर हो और न आकाश में हो न धरती पर हो सके ।"

ब्रह्मा ने हिरण्यकश्यप की इच्छा पूरी कर दी और उस दिन से वह अपने भाई की तहर एक तानाशाह के रूप में रहने लगा था, क्योंकि वह खुद को अमर समझने लगा था । उसने यह घोषणा कर दी थी कि पृथ्वी पर उपस्थित सभी लोगें को उसकी पूजा करनी चाहिए, क्योंकि वह असुरों और देवताओं में सबसे अधिक शक्तिशाली था। उसके शासन के तहत हर कोई उससे डरता था, कोई भी उसके आदेश की अवज्ञा की हिम्मत नहीं करता था ।

लेकिन हिरण्यकश्यप को प्रह्लाद नामक एक पुत्र था । युवा प्रह्लाद अपने पिता की पूजा करने के बजाए भगवान विष्णु के प्रति समर्पित था । यह बात उसके पिता को बहुत परेशान करती थी । इसलिए हिरण्यकश्यप ने प्रह्लाद को नगर में दैत्यों के गुरु के पास भेजा । लेकिन कुछ ही दिनों में दैत्यगुरु वापस शिकायत करने आए कि अपना आचरण बदलने के बजाए प्रह्लाद ने अपने सहपाठियों को भी भगवान विष्णु की पूजा के लिए मना लिया है ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

हिरण्यकश्यप को यह सुनकर बहुत अधिक क्रोध आया और उसने सैनिकों को आदेश दिया कि प्रह्लाद को पहाड़ से नीचे फेंक दिया जाए । सैनिक उस निर्दोष बालक के लिए खेद अनुभव कर रहे थे, परन्तु वह अपने राजा की अवज्ञा भी नहीं कर सकते थे । इसलिए उन्होंने प्रह्लाद को एक ऊंचे पहाड़ से नीचे फेंक दिया । इतने ऊपर से गिरने के बावजूद प्रह्लाद को एक खरोंच तक नहीं आई थी ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

जब उसके सैनिको ने पूरी घटना का वर्णन सुनाया, तो हिरण्यकश्यप का क्रोध और भी बढ़ गया । उसकी एक बहन थी, जिसका नाम होलिका था । होलिका ने कहा, " भाई, मुझे एक वरदान प्राप्त है कि मैं कभी आग से जल नही सकती हूं । यदि आप अनुमति दें तो मैं प्रह्लाद को अपनी गोद में लेकर चिता में बैठ जाऊंगी । वह कुछ ही पलों में जलकर राख हो जाएगा ।" राजा सहमत हो गया, होलिका प्रह्लाद के साथ उस जलती हुई चीता में बैठ गई । लेकिन तभी एक और चमत्कार हुआ । होलिका ने चीखना शुरू कर दिया, क्योंकि उसका वरदान असफल हो गया था । वह जलकर राख में परिवर्तित हो गई, परन्तु प्रह्लाद को कुछ नहीं हुआ था । वह सुरक्षित रूप से आग में बैठा था ।

हिरण्यकश्यप ने गरजते हुए कहा, "मैं तुम्हारे भगवान को चुनौती देता हूं कि वह मुझे परास्त करे । कहां है तुम्हारा भगवान ? क्या वह मुझसे भयभीत होकर कहीं छुप गया है ? प्रह्लाद ने कहा, "पिताजी, भगवान विष्णु कभी भयभीत नही होते । वह सर्वशक्तिमान हैं । वह हर जगह हैं ।" हिरण्यकश्यप ने कहा, "हर जगह ? क्या वह इस खंभे में भी हैं ?" प्रहलाद ने कहा, "हां, पिताजी । वह इस खंभे में भी हैं ।"

हिरण्यकश्यप ने खंभे पर मुक्का मारा और वह खंभा टूटकर जमीन पर गिरने लगा । उसके अंदर से शेर के मुंह वाला एक बड़ा प्राणी बाहर आया, जिसका आधा शरीर मानव

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

और आधा शरीर शेर का था । वह जोर से गरजा और अपने दोनों हाथों से हिरण्यकश्यप को अपने सिर के ऊपर उठा लिया । वह दुष्ट राजा को उठाकर द्वार पर ले गया और महल की दहलीज पर बैठ गया । उसने राजा को अपने घुटने पर रखा और सूर्य के ढलने के वक्त अपने पंजों से उसकी छाती फाड़ दी । हिरण्यकश्यप की मृत्यु हो गई, क्योंकि वह न तो घर के बाहर था और न घर के अंदर था बल्कि द्वार पर था । जिसने उसे मारा वह न तो मानव था और न ही पशु था और मानव पशु ने उसे अपने पंजे से मारा था, इसलिए किसी हथियार का प्रयोग नही हुआ था । यह न तो रात था और न ही दिन था बल्कि यह शाम था और वह मानव पशु के घुटनों पर मरा था जो न तो धरती था और न ही आकाश था ।

प्रह्लाद मानव पशु के आगे झुक गया, क्योंकि वह भगवान विष्णु थे । भगवान विष्णु के आधे मानव और आधे शेर के अवतार को हम नरसिम्हा अवतार के रूप में जानते हैं । भगवान विष्णु के हाथों मारे जाने के बाद हिरण्यकश्यप भगवान विष्णु के निवास को चला गया, इस प्रकार उन चार ऋषियों के श्राप से उसे मुक्ति मिली ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सावित्री और सत्यवान

बहुत समय पहले भारत में एक राजा था, जिसकी कोई सन्तान नहीं थी । उसे अक्सर इस बात की चिंता होती थी कि उसके मरने के बाद उसके राज्य का क्या होगा । उसने कई देवताओं की पूजा की और बच्चे के लिए कई सारे बलि संस्कार भी किये । लेकिन यह सब व्यर्थ हो गया । परन्तु एक दिन, देवी सावित्री उसके सपने में आई और कहा, "मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हुई हूं और तुम्हें उपहार स्वरूप एक बेटी दूंगी ।"

जल्द ही राजा और उसकी रानी को आशीर्वाद के रूप में एक बेटी हुई । राजा की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं थी । उन्होने देवी के नाम पर ही उसका नाम सावित्री रखा । सावित्री एक बहुत ही सुंदर और बुद्धिमान युवती के रूप में बड़ी हो गयी ।

उसके माता – पिता ने एक उपयुक्त राजकुमार से उसका विवाह करने का निर्णय किया । लेकिन उनकी पुत्री के योग्य उपयुक्त वर खोजना कठिन था । इसलिए सावित्री ने कहा, "पिताजी, मुझे पूरे राज्य में यात्रा करने दीजिए और अपने लिए पति खोजने दीजिए ।" फिर उसने एक साधारण युवती का वेश धारण कर महल छोड़ दिया और नगर – नगर यात्रा शुरू कर दी ।

वह कई महीनों तक यात्रा करती रही और अंत में एक आश्रम में पहुंच गयी । सावित्री ने वहां कुछ दिन बिताने का फैसला किया । एक दिन वह अपना दैनिक कामकाज कर रही थी, तभी सावित्री ने एक नौजवान युवक को एक बूढ़े व्यक्ति की सेवा करते हुए देखा । सावित्री ने आश्रम के ज्येष्ठ ऋषि से उनके बारे में पूछा । तब उस वृद्ध ज्ञानी ऋषि ने कहा, "तुम जिस नौजवान को देख रही हो, वह एक राजकुमार है । उसका नाम सत्यवान है । वह अंधे बूढ़े व्यक्ति उसके पिता हैं । वह अपना राज्य एक दूसरे राजा से हार गए हैं और अब इस आश्रम में रहने को मजबूत हैं । राजा ने उम्र के साथ अपनी दृष्टि भी खो दी है । राजकुमार अपने पिता की देखभाल कर रहा है ।"

सावित्री ने सत्यवान से शादी करने का फैसला कर लिया । वह अपने महल वापस आ गई और उसके बारे में अपने माता-पिता को बताया । राजा और रानी दोनो बहुत ही खुश हुए । वह विवाह का प्रस्ताव लेकर आश्रम में गए ।

वह अंधे राजा सावित्री के पिता से मिलकर बहुत खुश हुए । सत्यवान ने भी खुशी से प्रस्ताव स्वीकार कर लिया । लेकिन जब उनकी कुंडली का मिलान किया गया तब,

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

ऋषियों ने चेतावनी दी कि सत्यवान की मृत्यु एक वर्ष में हो जाएगी । इसके बावजूद सावित्री सत्यवान से ही विवाह करना चाहती थी ।

कुछ महीनों बाद सत्यवान और सावित्री ने शादी कर ली । सावित्री ने राजकुमारी जैसा विलासितापूर्ण जीवन छोड़ दिया और सत्यवान के साथ आश्रम में रहने आ गई । हालांकि वह बहुत खुश थी, परन्तु उसे वर्ष का अन्त होने पर पति के जीवन का डर लग रहा था ।

अपने उम्र के आखिरी दिन, जब सत्यवान जंगल से लकड़ी काटने के लिए गया, तो वहां उसे चक्कर आने लगे और वह जमीन पर गिर गया । जब सावित्री ने उसे देखा तो वह उसकी तरफ भागी और उसका सिर अपनी गोद में लेकर बैठ गई ।

अचानक मृत्यु के देवता भगवान यम उनके पास आए । सत्यवान की आत्मा को उन्होंने अपने फंदे से पकड़ा और जाने लगे । सावित्री ने उनसे प्रार्थना की, "मैं आप से विनती करती हूं कि मेरे पति को छोड़ दीजिए ।" भगवान यम ने सावित्री को सांत्वना देने की कोशिश की। उन्होंने कहा,"पुत्री, सत्यवान महान पुण्य वाला इंसान था और मेरे राज्य में खुशियां उसका इंतजार कर रही हैं ।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सावित्री ने कुछ नहीं कहा बल्कि उठी उनके पीछे चलने लगी । यम ने कहा, "तुम यमलोक तक मेरे पीछे नहीं आ सकती हो ।" सावित्री ने कहा, "प्रभु मैं जानती हूं कि आप मेरे पति की आत्मा को समय आने पर दूर ले जाकर अपना कर्तव्य पूरा कर रहे हैं । परन्तु उनकी पत्नी के रूप में मेरा कर्तव्य है कि मैं उनके बगल में खड़ी रहूं ।"

यम ने कहा, "तुम्हारे कर्तव्य पूरे हो गए हैं, क्योंकि तुम्हारे पति कि मृत्यु हो गई है । लेकिन मैं तुम्हारी निष्ठा की प्रशंसा करता हूं । इसलिए मैं तुम्हारी इच्छा का एक वरदान देता हूं । लेकिन अपने पति का जीवन मत मांगना ।" सावित्री ने कहा, "कृपया मेरे पति का राज्य वापस कर दीजिए और मेरे ससुर की दृष्टि वापस कर दीजिए ।"

भगवान यम ने सावित्री की इच्छा पूरी कर दी और चल पड़े । सावित्री ने उनका पीछा करना जारी रखा । यम ने कहा, पुत्री तुम वापस चली जाओ, तुम्हें मेरे पीछे नहीं आना चाहिए ।" सावित्री ने कहा, "प्रभु, मेरे पति को आपके राज्य में खुशियां मिल जाएगी,लेकिन आप मुझसे मेरी खुशियां दूर ले जा रहे हैं ।"

यम ने कहा, "मैं तुम्हारी भक्ति की प्रशंसा करता हूं । मैं तुम्हें एक और इच्छा का वरदान देता हूं ।" सावित्री ने कहा, "मैं अपने पिता की इकलौती संतान हूं । जबसे मैंने विवाह किया है और उन्हें छोड़ा है, वह बहुत दुखी रहने लगे हैं । मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि आप उन्हे कई पुत्र दे दें ।" भगवान यम ने सावित्री की यह इच्छा भी पूरी कर दी । फिर उन्होने खड़ी ढलान पर चढ़ना शुरू कर दिया । सावित्री उनके पीछे चल रही थी । इससे वह बहुत थक गई परन्तु वह फिर भी नहीं रुकी ।

यम ने कहा, मैं तुम्हें आगे आने के लिए मना करता हूं । मैं तुम्हें आखिरी बार कह रहा हूं कि तुम बहुत आगे तक आ गई हो । मैं तुम्हारे साहस और दृढ़ता की प्रशंसा करता हूं । मैं तुम्हें अंतिम वरदान देता हूं, अपने पति के जीवन के अलावा कुछ भी मांग लो ।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सावित्री ने कहा, "प्रभु मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं अपने पति के बहुत से बच्चों की मां बनुं ।" उसकी इस इच्छा को सुन कर यम हैरान रह गए । सावित्री ने अपने पति का जीवन नहीं मांगा था, परन्तु उसको दिए वरदान के लिए वे सत्यवान की आत्मा को छोड़ने को मजबूर हो गए थे । तभी सावित्री ने देखा कि वह अपने पति का सिर अपने गोद में लिए जंगल में बैठी है । सत्यवान ने अपनी आंखे खोल लीं । सावित्री की आंखो में आंसू देखकर उसने पूछा, "क्या हुआ ?" सावित्री ने उसके सिर को सहलाया और मुस्कुरा दी । इसके बाद वह बहुत लम्बे समय तक खुशी से साथ रहे ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

साहसी राजकुमार ध्रुव

एक बार की बात है उत्तानपाद नामक एक राजा राज्य करते थे । उनकी दो रानियों थीं , सुनीती और सुरुचि । प्रत्येक रानी का एक-एक पुत्र था । सुनीती के पुत्र का नाम ध्रुव था और सुरुचि के पुत्र का नाम उत्तम था । राजा अपनी दूसरी रानी सुरुचि से अधिक प्रेम करते थे । इसलिए उत्तम उनका पसंदीदा पुत्र था ।

एक दिन ध्रुव ने देखा कि उत्तम उसके पिता की गोद में बैठा हुआ खेल रहा था । उसकी भी इच्छा थी कि वह अपने पिता की गोद में बैठे । वह अपने पिता के पास गया और कहा , "पिताजी ,मुझे भी अपनी गोद में बैठा लीजिए । मैं भी आपके साथ खेलना चाहता हूं ।" लेकिन उसकी सौतेली मां सुरुचि ने कहा , " ध्रुव आप उतने भाग्यशाली नहीं हैं ,क्योंकि आपने मेरे पुत्र के रूप में जन्म नहीं लिया । इसलिए केवल मेरे पुत्र को राजा के गोद में बैठने की अनुमति है । जाइए और भगवान विष्णु से प्रार्थना कीजिए कि अगले जन्म में आप मेरे पुत्र के रूप में पैदा हो सकें ।"

अपनी सौतेली मां के इन कठोर शब्दों से ध्रुव को बहुत तकलीफ हुई । वह रोते हुए अपनी मां सुनीति के पास गया । जो कुछ भी हुआ था उसने उन्हे सब कुछ बता दिया । सुनीति ने अपने पुत्र को यह कहते हुए सांत्वना दी कि ," चिंता मत करो पुत्र । भगवान विष्णु महान हैं । वह हम सभी से प्रेम करते हैं । वह तुम्हारा भी ख्याल रखेंगे ।" ध्रुव ने पूछा क्या भगवान विष्णु उसके पिता से अधिक महान हैं ? उसकी मां ने कहा , " निस्संदेह वह सबसे महान हैं । ध्रुव ने भगवान विष्णु को खोजने का निर्णय कर लिया ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

दस वर्षीय ध्रुव ने अपना महल छोड़ दिया और भगवान विष्णु की तलाश में जंगल में चला गया । वह जंगल में कई दिन तक चलता रहा और एक दिन वह नारद मुनि से मिला । नारद मुनि ने पूछा , " आप के जैसा छोटा बालक इस भयानक जंगल में क्या कर रहा है ?" ध्रुव ने उनसे कहा कि वह भगवान विष्णु को खोज रहा है । नारद ने कहा ," मुझे डर है कि इस तरह जगंल में भटकते हुए आपको भगवान मिलेंगे या नहीं । आपको इसके लिए घोर तपस्या करनी होगी ।" ध्रुव ने कहा ,"मैं तपस्या करने के लिए तैयार हूं । मुझे बताइये कि भगवान को खुश करने के लिए मुझे क्या करना होगा ?"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

नारद ने कहा ।" तपस्या आप जैसे मासूम बच्चों कि लिए नहीं होती है । आपको यमुना नदी के किनारे एक खास पेड़ के नीचे बैठना होगा और बिना भोजन या पानी के , बिना सोए या व्यायाम किए सालों तक भगवान के नाम का जप करना होगा ।" ध्रुव ने नारद को उनकी सलाह के लिए धन्यवाद दिया और यमुना नदी के किनारे एक पेड़ के पास चला गया । वह वहां नीचे बैठकर "ओम नम :नारायण" का जाप करने लगा । कई साल बीतने के बाद भी ध्रुव वहां से नहीं हिला ।

आखिरकार एक दिन भगवान विष्णु उसके सामने प्रकट हुए , तब उसे तपस्या शुरू की थी , तब वह भगवान से कई सारे सवाल पूछना चाहता था । परन्तु जब भगवान उसके सामने प्रकट हुए ,तब उसे एहसास हुआ उसके सवाल कितने महत्वहीन थे । भगवान विष्णु ने कहा, "मैं तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूं । मुझे बताओ तुम्हारी क्या इच्छा है ?"

ध्रुव ने कहा ," प्रभु ,मेरी इच्छा सिर्फ आपके दर्शन करने की थी । अब आप यहां हैं । मेरी अब कोई और इच्छा नही है ।" भगवान विष्णु बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने कहा, " तुम्हारी भक्ति और ज्ञान महान है । मैं तुम्हे यह आशीर्वाद देता हूं कि जब तक तारे आकाश मे चमकेंगे ,तब तक तुम्हारी प्रसिद्धि पूरी दुनिया में रहेगी । सारे तारे तुम्हारे चारों तरफ

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

घूमेंगे । तुम आकाश से यात्रियों को रास्ता दिखाओगे , जब वह अपना रास्ता भटक जाएंगे ।"

ध्रुव अपने माता पिता के घर लौट आए । उसके शहर के लोगों ने उसका भव्य स्वागत किया । अपने पिता कि मृत्यु के बाद ध्रुव ने न्यायपूर्वक राज्य पर शासन किया और एक महान राजा साबित हुए । जब वह मरे तो आकाश में एक चमकीले तारे के रूप में परिवर्तित हो गए । यहां तक कि हम आज भी उत्तरी ध्रुव में स्थित तारे को यात्रियों को रास्ता दिखाते हुए देख सकते हैं ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

भस्मासुर

एक बार एक शक्तिशाली असुर ने भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए सैकड़ों वर्षों तक कठोर तपस्या की थी। वह घने जंगल के बीच में गया और एक पेड़ के नीचे बैठकर भगवान शिव के नाम का जाप करने लगा । अंत में भगवान शिव प्रसन्न हुए और भस्मासुर के सामने प्रकट होकर कहा, "मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हुआ हूं । मुझे बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है?"

भस्मासुर ने कहा, "प्रभु, मुझे वरदान दीजिए कि मैं अमर हो जाऊं।" भगवान शिव ने कहा, "मैं तुम्हे अमर नहीं बना सकता हूं। मुझसे कुछ और मांग लो।" तब भस्मासुर ने कहा, "भगवान तब मुझे आशीर्वाद दीजिए कि जैसे ही मैं किसी के सिर पर हाथ रखूं , वह राख में भस्म हो जाए।"

भगवान शिव के पास दुष्ट भस्मासुर की इच्छा पूरी करने की अलावा कोई और चारा नही बचा था। वह जानते थे कि ऐसा होने पर कोई भी उसे हराने में सक्षम नहीं होगा । फिर भी उन्होंने यह वरदान दे दिया। उसने कई इंसानों को मार दिया । जब वह इंसानों को मारते हुए थक गया, तो उसने देवताओं का पीछा करना शुरू कर दिया ।

भस्मासुर को हराने में असमर्थ होने पर सभी देवता भगवान विष्णु के पास गए। उन्होंने कहा, "प्रभु, अपने वरदान के बल से भस्मासुर इंसानों की हत्या कर रहा है और देवताओं को डरा रहा है। इस तरह वह जल्दी ही पृथ्वी और स्वर्ग को जीत लेगा।" भगवान विष्णु ने उन्हें चिंता नहीं करने को कहा। उन्होंने खुद को मोहिनी के रूप में परिवर्तित कर लिया और भस्मासुर के पास चले गए ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

मोहिनी इतनी सुंदर थी कि भस्मासुर उस पर से अपनी आंखे हटा ही नहीं पा रहा था। उसने मोहिनी से कहा, "मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझसे विवाह कर लीजिए ।" मोहिनी शर्माते हुए बोली, " मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकती हूं । तुम एक बदसूरत राक्षस हो ।" भस्मासुर प्रेम में अंधा हो गया था, इसलिए वह उसके लिए कुछ भी करने को तैयार था। उसने कहा, "प्यारी देवी मुझसे विवाह कर लो । मैं तुम्हारे लिए कुछ भी करूंगा ।" मोहनी ने कहा, "ठीक है, पर एक शर्त है । अगर तुम एक अच्छे नर्तक हुए, तो मैं तुमसे शादी कर लूंगी ।" उसने कहा कि वह मोहिनी को यह साबित कर देगा कि वह एक अच्छा नर्तक है । मोहिनी ने कहा, "मैं नचुंगी । यदि तुमने अपने कदमों को मेरे कदमों से लिया, तो मैं तुमसे विवाह कर लुंगी । भस्मासुर सहमत हो गया ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

नृत्य शुरू हुआ । मोहिनी जैसा नृत्य करती, भस्मासुर भी उसी तरह नृत्य करने लगा । नृत्य के दौरान मोहिनी ने अपने हाथ अपनी कमर पर रखे, तो भस्मासुर ने भी अपने हाथ अपने कमर पर रख लिए । फिर मोहिनी ने अपने हाथ अपने कंधों पर रखे, तो भस्मासुर ने भी वैसा ही किया । फिर मोहिनी ने अपने हाथ अपनी नाक पर रखे, तो भस्मासुर ने भी अपने हाथ अपनी नाक पर रख लिए । फिर उसने अपने गाल छुए, तो भस्मासुर ने भी अपने गाल छुए ।

वह लंबे समय तक अथक नृत्य करते रहे । मोहिनी ने जो कुछ भी किया, भस्मासुर उसके कदम से कदम मिलाने की पूरी कोशिश कर रहा था । वह उसके प्रेम में इतना पागल हो गया था कि वह अपने वरदान के बारे में भी भूल गया था । मोहिनी ने मौके का फायदा उठाया और अपना हाथ अपने सिर पर रख दिया । परन्तु जैसे ही उसकी नकल करते हुए भस्मासुर ने अपना हाथ अपने सिर पर रखा , वह राख़ में बदल गया ।

भस्मासुर की मृत्यु हो गई और सभी देवताओं ने राहत की सांस ली । इस प्रकार मोहिनी जिसने पहले भी दैत्य और असुरों को अमरता का अमृत देते समय चकमा दिया था, उसने इस बार भस्मासुर को चकमा दिया और उसने अपने सिर पर हाथ रख कर खुद को राख में परिवर्तित कर दिया । मोहिनी अपने मूल रूप में आ गई । भस्मासुर की राख पर भगवान

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

विष्णु खड़े थे । स्वर्ग से उन पर फूलों की वर्षा होने लगी थी ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कृष्ण का जन्म

बहुत समय पहलें कंस नामक एक शक्तिशाली दानव मथुरा शहर पर शासन करता था। वह बहुत ही क्रूर राजा था। इसलिए मथुरा के निवासी कंस से भयभीत रहते थे। ऐसा कहा जाता था कि पृथ्वी पर ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं था जो कंस को हराने में सक्षम हो। इसलिए लोगों के पास अपने राजा की क्रूरता को सहन करने के अलावा कोई और चारा नहीं था।

लेकिन कंस अपनी बहन देवकी से बहुत प्रेम करता था। कंस के विपरीत देवकी दयालु और सज्जन थी। जब वह विवाह के योग्य हुई, तब कंस ने उसका विवाह भगवान विष्णु के भक्त वासुदेव से करने की व्यवस्था की।

लेकिन जैसे ही समारोह शुरू हुआ, एक तूफान जैसी आवाज आकाश से गूंजी। उसने कहा, "देवकी और वासुदेव का विवाह सुखी होगा और इस जोड़े से आठ पुत्र जन्म लेंगे। परन्तु कंस सावधान! देवकी का आठवां पुत्र ही तुम्हारी मृत्यु का कारण बनेगा।"

वहां पर उपस्थित हर किसी के मन में भय और भ्रम फैल गया। कंस क्रोध से कांप उठा। परन्तु क्रोध में होने के बावजूद कंस जानता था कि यह भविष्यवाणी है, जिसका होना तय था। उसका भाग्य पर कोई अधिकार नहीं था।

वह देवकी और वासुदेव की तरफ इशारा करते हुए गरजा, "इन्हें कारागार में डाल दो और इनके बचे हुई जीवन के हर एक क्षण पर निगरानी रखो!" कंस के सैनिकों ने देवकी और वासुदेव को कंस के महल के गहरे अंधेरे तहखाने में बंद कर दिया।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कई वर्ष बीत गए। कंस देवकी के बच्चे को हर बार पैदा होते ही मार देता था। वासुदेव ने भगवान विष्णु से प्रार्थना करते हुए कहा, "प्रभु, कृपया हमारे बच्चों को बचा लीजिए। कंस को हमारे सभी बच्चों को मारने मत दीजिए।" जल्द ही देवकी ने अपने आठवें बच्चे के लिए गर्भ धारण किया। यह वह बच्चा था, जिसके लिए कहा गया था कि वह कंस का वध करेगा। कंस ने कारागार में सैनिकों की संख्या दुगनी कर दी। श्रावण मास की एक रात देवकी के आठवें बच्चे का जन्म हुआ। वह एक सुंदर छोटा बालक था। देवकी और वासुदेव ने उसे कृष्ण बुलाने का निर्णय लिया, क्योंकि वह उस घने अंधेरे बादल के समान था जिसने उस रात आकाश को ढक लिया था।

वासुदेव और देवकी भयभीत थे, लेकिन तभी एक चमत्कार हुआ। उस तहखाने के द्वार पर बैठे सैनिक और उस महल में रहने वाला हर मनुष्य सो गया। अचानक वह अंधेरा तहखाना चमकती रोशनी से भर गया और एक बार फिर आकाश से आवाज सुनाई दी। उसने वासुदेव से कहा, "अपने पुत्र को गोकुल में, यमुना नदी के पार नंद चरवाहे के घर लेकर जाओ। नंद की पत्नी को अभी एक बच्चा हुआ है। अपने बच्चे को उसके पास छोड़ दो और उसका बच्चा देवकी के पास लेकर आ जाओ।"

वासुदेव की बेड़ियां उनकी एड़ियों से दूर गिर गयीं आश्चर्यचकित होकर उसने अपने पुत्र

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

को अपनी बांहों में उठाया और तहखाने से बाहर चले गये। बाहर घनी और तूफानी रात थी। वासुदेव अपने नवजात पुत्र को सीने से लगाकर घनघोर बारिश में निकल गये थे। जब वह यमुना नदी के पास पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि नदी में बाढ़ थी। पुल नदी में डूब गया था और उसे पार करने का कोई और रास्ता नहीं था।

वासुदेव ने सोचा, "मैं नदी कैसे पार करूंगा?" वासुदेव बच्चे को अपने सिर के ऊपर रखकर नदी में उतर गये। नदी का पानी ऊपर उठता गया एवं लहरें और भी शक्तिशाली होती गई। लेकिन उनके हाथों में वह बच्चा हंस रहा था। उसने अपने नन्हे पैर बाहर निकाले और लहरों को छुआ। अचानक नदी शांत हो गई और लहरें थम गई। उस नदी से एक विशाल सांप निकला। उसने अपने पांच सिर छतरी की तरह फैला लिए और बारिश से वासुदेव और बच्चे के रक्षा करने लगा। वह उनके पीछे तब तक रहा, जब तक वह नदी के दूसरी तरफ सुरक्षित नहीं पहुंच गए।

गोकुल में, वासुदेव को नंद के घर का रास्ता मिल गया। एक कमरे में दीपक जल रहा था, जहां नंद की पत्नी यशोदा अपने नवजात शिशु के साथ सो रही थी। वासुदेव ने चुपचाप कक्ष में प्रवेश किया। उसने अपने बेटे को यशोदा के बगल में रख दिया और उसकी बेटी को उठा लिया। जिस तरह वह चुपचाप आये थे, उसी तरह वासुदेव उस बच्ची को लेकर मथुरा

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

लौट गये।

वासुदेव ने कारागार में प्रवेश किया और छोटी बच्ची को देवकी के बगल में सुला दिया। कारागार के द्वार अपने आप बंद हो गए, वासुदेव की बेड़ियां खुद उनके पैरों में आ गई और कारागार के सैनिक जम्हाई और अंगड़ाई लेते हुए उठ गए। वह चकित थे कि वह इतनी गहरी नींद में सो गए थे। सैनिक तुरंत तहखाने के द्वार पर गए और उन्होंने देखा कि देवकी ने एक नवजात बच्चे को बांहों में पकड़ा हुआ था।

वे चिल्लाए "आठवां बच्चा, आठवें बच्चे का जन्म हो गया है!" एक संदेशवाहक को कंस के पास भेजा गया। देवकी ने बच्चे को गोद में छिपा लिया। देवकी रोते हुए बोली, "भईया, यह तो एक लड़की है। यह आपको नुकसान कैसे पहुंचा सकती है? कृपया इसको जीवनदान दे दीजिए।"

कंस ने कहा, "लड़की हो या लड़का, यह तुम्हारी आठवीं सन्तान है। इसे मर जाना चाहिए।" उसने बच्ची को अपने सिर से ऊपर उठाया और जैसे ही उसको धरती पर फेंकने की कोशिश की तभी वह बच्ची उसके हाथ से फिसल गई और तहखाने की खिड़की से बाहर उड़ गई। उसने कहा, "मैं माया हूं। मेरा जन्म तो तुम्हे मूर्ख बनाने के लिए हुआ था। तुम्हे मारने वाले का जन्म हो गया है और वह सुरक्षित है। तुम्हारी मृत्यु देवकी के आठवें पुत्र के द्वारा ही होगी। यही तुम्हारा भाग्य है।" माया हंसते हुए अदृश्य हो गई। कंस उग्र हो गया, लेकिन वह कुछ कर भी नहीं सकता था। उसने देवकी के आठवें पुत्र को खोजने और मारने की कसम खाई।

कृष्ण, नंद और यशोदा के साथ गोकुल में सुरक्षित थे। वह उनके पुत्र के रूप में बड़े हुए। उनके बड़े होने पर कंस ने कई दैत्य उनके पीछे भेजे, परंतु कृष्ण ने सबको मार दिया। बाद में कृष्ण ने कंस का वध कर दिया जैसी भविष्यवाणी की गई थी।

ऐसा कहा जाता है कि श्री कृष्ण मनुष्य के रूप में खुद भगवान विष्णु थे, जिन्होंने संसार को कंस से मुक्ति दिलाने के लिए जन्म लिया था। जिस महान सांप ने नदी पार करते समय वासुदेव और नन्हे कृष्ण की रक्षा की थी, वह भगवान विष्णु के विश्सवसनीय सांप, शेष नाग थे। बाद में भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार ने महाभारत का युद्ध जीतने में पांडवों की सहायता की थी और इस प्रकार बुराई पर विजय के लिए अच्छाई की मदद की।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कृष्ण और गोवर्धन पर्वत

भगवान कृष्ण ने ब्रज के लोगों को गोवर्धन पहाड़ी के नीचे पनाह देकर सात दिनों से हो रही भारी वर्षा से बचाया था ।

बहुत समय पहले ब्रज में कई वर्षो से वर्षा नहीं हुई थी । वहां की जनता निराश होकर वर्षा के देवता ,भगवान इन्द्र की पुजा कर रही थी । उन्होंने भगवान इन्द्र को मनाने के लिए हर प्रकार के उपाय किए , परन्तु इसका कोई असर नहीं हुआ । इसलिए भगवान कृष्ण ने उन्हें भगवान इन्द्र की पुजा न करने को राजी कर लिया । उन्होंने कहा ,"वर्षा के लिए पर्वतों , वृक्षों और नदियों की पुजा करनी चाहिए । गोवर्धन पर्वत की प्रार्थना करो वह निश्चित रूप से वर्षा लेकर आएंगे ।"

ब्रज की जनता ने गोवर्धन पर्वत की पुजा शुरु कर दी और भगवान कृष्ण भी उनके साथ शामिल हो गए । इस बात ने भगवान इन्द्र को बहुत अधिक क्रोधित कर दिया । उन्होंने खुद को अपमानित महसूस किया और बदला लेने का निर्णय लिया । उन्होंने सोचा , "इन ग्वालों और चरवाहों ने मेरा अपमान करने की हिम्मत कैसे की ? मैं उन्हे ऐसा सबक सिखाऊंगा कि वह उसे अपने पूरे जीवन याद रखेंगे ।"

भगवान इन्द्र ने समवर्तक को बुलाकर पृथ्वी पर बारिश करने को कहा । वह घने काले बादल थे और उन्होंने पृथ्वी पर मूसलाधार वर्षा शुरू कर दी । समवर्तक की भारी बूंदों के गिरने से ब्रज डूबने लगा और नदियों और झीलों में पानी भर गया । बिजली और तूफान ने निर्बल लोगों के दिल में भय पैदा कर दिया । तेज हवाओं ने वृक्षों को जड़ से उखाड़ दिया और घरों को नष्ट कर दिया ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सभी लोग भगवान कृष्ण के पास गए । उन्होंने कहा , "हे कृष्ण, केवल आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं । यदि वर्षा इसी प्रकार जारी रही तो , हम सभी अपने मवेशियों और झुंडों के साथ मर जाएंगे ।" भगवान कृष्ण जानते थे कि यह असामयिक तूफान लाकर भगवान इंद्र गलत कर रहे थे । उन्हें अपने लोगों की रक्षा करने और इंद्र के घमंड को नष्ट करने के लिए कुछ करना था ।

उन्होंने अपनी सारी शक्ति अपनी छोटी उंगली पर केन्द्रित कर दी थी और गोवर्धन पर्वत के पास गए । उन्होंने गोवर्धन पर्वत को ऊपर उठाया और अपनी छोटी उंगली पर रख दिया । हर कोई हैरान था ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उन्होंने कहा, " अपने परिवार , मवेशियों और झुंडों को यहां लेकर आओ । हम सब को तब तक इस पर्वत के नीचे रहना होगा जब तक कि तूफान थम न जाए । चिंता नहीं करो , गोवर्धन पर्वत आप पर नहीं गिरेगा और आप सुरक्षित रहेंगे ।" हर कोई उस बड़े पर्वत के नीचे शरण लेने के लिए भागा । लगभग सात दिनों तक वर्षा होती रही , परन्तु गोवर्धन पर्वत के नीचे आश्रय लिए एक भी मनुष्य या पशु पर वर्षा की एक बूंद भी नहीं गिरी ।

भगवान कृष्ण ने वर्षा के समय बिना हिलाए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी उंगली पर उठाये रखा । भगवान कृष्ण के दृढ़ संकल्प से भगवान इंद्र हैरान थे । अंत में मजबूर होकर उन्होंने उम्मीद छोड़ दी और सात दिनों बाद वर्षा रुक गई ।

अगले दिन जब श्री कृष्ण अपने भाई बलराम के साथ मैदान में गायों को चराने गए, तब भगवान इन्द्र अपने दिव्य हाथी पर बैठकर नीचे आए और भगवान कृष्ण से क्षमा मांगने लगे । उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया था । वर्षा के खत्म हो जाने के बाद ब्रज मे सभी लोग खुशियां मनाने लगे ।

उस दिन से ब्रजवासी अपने रक्षक के रूप में गोवर्धन पर्वत की पूजा करने लगे । गोवर्धन पर्वत को इतना प्रेम और सम्मान मिला की लोग इसे गिरिराज और पर्वतों का राजा भी

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कहने लगे । आज श्री कृष्ण को राजस्थान में भक्तों द्वारा श्री गिरधारी या पर्वतों के धारक या द्वारकानाथ के रूप में भी पुकारा जाता है ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सुदामा

ऋषि संदीपनी के आश्रम में कृष्ण और गरीब ब्राह्मण सुदामा में अच्छी दोस्ती हो गई। कहा जाता है कि भगवान कृष्ण ने सुदामा से कुछ मंत्र भी सीखे। एक दिन ऋषि ने उन्हें आग जलाने के लिए जंगल से कुछ लकड़ी लाने के लिए कहा। कृष्ण और सुदामा दोनों लकड़ी लाने एक साथ जंगल में गए। जंगल में दोनों लकड़ी इकट्ठी कर ही रहे थे कि अचानक भयानक तूफान आ गया। सुदामा चिंतित हो गए, लेकिन कृष्ण ने उनका हाथ पकड़ कर उन्हें नहीं घबराने का आश्वासन दिया। तूफान गुजरने के बाद लकड़ी लेकर दोनों वापस आश्रम आ गए। कृष्ण ने सुदामा का साथ कभी नहीं छोड़ा। वहीं सुदामा ने अच्छे दोस्त के रूप में कृष्ण का साथ पाने के लिए भगवान को धन्यवाद दिया।

पढ़ाई पूरी करने के बाद सुदामा और कृष्ण दोनों अपनी-अपनी राह चले गए। ऋषि संदीपनी ने उन्हें लंबे जीवन और खुश रहने का आशीर्वाद दिया। कृष्ण द्वारका के राजा बने और राजकुमारी रुक्मणी से विवाह रचाया, वहीं सुदामा एक साधारण ब्राह्मण लड़की से शादी रचाकर एक पुजारी के रूप में अपना जीवन व्यतीत करने लगे। वह शास्त्रों को पढ़ते और पुजा पाठ कराते थे। सुदामा सभी भौतिक और सांसारिक सुखों का त्याग कर अपनी पत्नी के साथ सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे थे। उनकी दयालुता और सज्जनता के कारण सुदामा को सभी लोग प्यार और सम्मान करते थे।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुछ समय बाद सुदामा की पत्नी ने दो बच्चों को जन्म दिया। साधारण जीवन यापन कर रहे सुदामा के लिए अब अपने परिवार के लिए रोजी-रोटी का सामान जूटाना मुश्किल होने लगा। अपने पति के लिए पूरी तरह से समर्पित सुदामा की पत्नी को अपने बच्चों का कष्ट बर्दाश्त नहीं हुआ, तो उसने एक दिन सुदामा से कृष्ण के पास जाने और मदद पाने के लिए याचना करने को कहा। इस पर सुदामा ने अपनी पत्नी को कहा, "मैं कैसे कृष्ण के पास सहायता मांगने के लिए जा सकता हूं, कहां वो द्वारका जैसे महान नगर के राजा और कहां मैं साधारण ब्राह्मण। मैं तो उनका मित्र कहलाने लायक भी नहीं हूं।"

लेकिन उनकी पत्नी उन पर कृष्ण के पास जाने के लिए लगातार दबाव बनाती रहीं। हारकर एक दिन सुदाम कृष्ण के पास जाने के लिए तैयार हो गए, लेकिन उनहोंने अपनी पत्नी से कहा, "ठीक है, मैं कृष्ण के पास जाने को तैयार हूं। लेकिन हमारे पास न तो खाने का एक दाना है और न ही हमारे पास कपड़े हैं। मैं कृष्ण से मिलूंगा तो उन्हें उपहार में क्या दूँगा?"

सुदामा की पत्नी ने उनकी बातें सुनकर कहा, "आपने ही कहा था कि कृष्ण को चिड़वा बहुत पसंद थे। मैं पड़ोसी से कुछ मांग लूंगी।" फिर उनकी पत्नी अपने पड़ोसी के यहां जाकर उनसे मुट्ठी भर चिड़वा मांग लाई और कपड़े की पोटली में बांधकर सुदामा को कृष्ण के पास जाने के लिए तैयार किया। कई दिनों तक जंगल में चलने के बाद सुदामा महान

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

द्वारका नागरी के द्वार पर पहुंचे। द्वारका नगरी का द्वार सोने का बना हुआ था और सूर्य की रोशनी में चमक रहा था। सुदामा जब द्वार से प्रवेश कर रहे थे, तो द्वारपाल ने उन्हें रोका और उनसे द्वारका आने का कारण पूछा। सुदामा ने जवाब दिया, " मैं कृष्ण से मिलने आया हूं।"

द्वारपाल हंसा और सुदामा का मजाक उड़ाते हुए कहा, "तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि हमारे राजा तुम जैसे गरीब ब्राह्मण से मिलेंगे?" सुदामा ने जवाब दिया, "क्योंकि मैं उनका मित्र हूं।" यह सुनकर द्वारपाल ने जोर से ठहाका लगाया। लेकिन बार-बार सुदामा के कहने पर द्वारपाल कृष्ण के पास गया और बोला, "महाराज राज्य के दरवाजे पर एक गरीब ब्राह्मण आया है, जो निश्चित ही पागल जान पड़ता है। उसका कहना है कि वो आपका मित्र है और खुद का नाम सुदामा बता रहा है।"

कृष्ण ने जैसे ही यह सुना , वह सिंहासन से कूद पड़े और नंगे पांव सड़कों पर दौड़ते हुए द्वार तक पहुंचे। खुशी के आंसुओं के साथ उन्होंने सुदामा का स्वागत किया और पूछा, "प्रिय मित्र इतने दिनों से तुम कहां थे। मैं तुम्हें बहुत याद कर रहा था।" कृष्ण से मिलकर सुदामा भी बहुत खुश हुए। वे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि कृष्ण खुद उन्हें लेने के लिए द्वार तक आए हैं। कृष्ण के महल में पहुंचकर सुदामा वहां के वैभव को देखकर चकित रह

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

गए। महल की दीवारें महंगे पत्थरों और सोने से बनी हुई थीं। कृष्ण सुदामा को महल के अंदर ले गए और खुद उनके पैरों को गुलाबजल से धोया। इसके बाद उन्होंने कई बातें की।

कुछ देर बाद कृष्ण ने देखा कि सुदामा के पास एक पोटली है, जिसमें कुछ बंधा हुआ है। उन्होंने सुदामा से पूछा, "क्या यह मेरे लिए है।" सुदामा यह सुनकर बहुत शर्मिंदा हुए उन्होंने सिर झुका लिया और कृष्ण की बातों का जवाब नहीं दिया। कृष्ण ने सुदामा से पोटली छीन ली और उसमें से चिवड़ा निकालकर खाने लगे।

कुछ दिनों बाद सुदामा ने कृष्ण से विदा मांगी । शर्मिंदा होने के कारण सुदामा ने कृष्ण को अपने स्थिति के बारे में अवगत नहीं कराया और न ही उनसे मदद मांगी। लौटते समय सुदामा पूरे रास्ते कृष्ण की दयालुता के बारे में सोचते रहे। उन्हें कृष्ण जैसा मित्र पाकर गर्व हुआ हो रहा था।

जब सुदामा घर पहुंचे तो उन्होंने चमत्कार देखा। उनकी झोपड़ी हवेली में बदल चुकी थी और उनके बच्चे हवेली के आंगन में खेल रहे थे। वे सभी नये कपड़े पहने हुए थे और बहुत खुश लग रहे थे।उनकी पत्नी ने जब सुदामा को द्वार पर खड़े देखा तो भागती हुई उनके पास आई और कहा, "यह तो चमत्कार हो गया, हमारी झोपड़ी हवेली में बदल चुकी है।"

सुदामा ने चुपचाप सिर हिला दिया। वे समझ गए कि कृष्ण के चमत्कार से ही ऐसा संभव हो सका है। अचानक उनकी आँखों से आंसू बह निकले। उन्होंने मन ही मन कृष्ण की उदारता और दयालुता के लिए उन्हें धन्यवाद दिया।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अर्जुन का निशाना

एक दिन सुबह छोटे से मैदान में बड़ी संख्या में तीर और धनुष लिए हुए युवा लड़के इकट्ठे हुए । वे कोई और नहीं पांडव और कौरव थे ।

पांच पांडव भाई और सौ कौरव भाई आपस में चचेरे भाई थे । इन लोगों की भयानक प्रतिद्वंद्विता बचपन से ही शुरू हो गई थी । उनके शिक्षक और सैन्य विशेषज्ञ द्रोणाचार्य ने एक दिन राजकुमारों के बीच एक प्रतियोगिता का आयोजन किया ।

जब सारे राजकुमार मैदान में इकट्ठे हो गए, तो द्रोणाचार्य ने नदी के पार एक पेड़ की छोटी टहनी से एक लकड़ी की चिड़िया बांध दी । उन्होंने सारे राजकुमारों से कहा कि "मैं देखना चाहता हूं कि तुम में से कौन उस चिड़िया की आंखें भेद सकता है ।"

यह सुनकर सभी राजकुमार आश्चर्य में पड़ गए, क्योंकि जहां वे खड़े थे वहां से चिड़िया बहुत ही छोटी दिखाई पड़ रही थी । हालांकि सभी राजकुमार द्रोणाचार्य की परीक्षा को पास कर लेने को लेकर आश्वस्त थे । इसके बाद सभी राजकुमार द्रोणाचार्य द्वारा नाम पुकारे जाने की प्रतीक्षा करने लगे ।

पांडव भाईयों में से सबसे बड़े युधिष्ठिर को सबसे पहले द्रोणाचार्य ने बुलाया । युधिष्ठिर धनुष पर बाण चढ़ाकर जब तैयार हो गए तो द्रोणाचार्य ने उनसे पूछा, "युधिष्ठिर बताओ, तुम्हें क्या दिखा रहा है?"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

अपने शिक्षक का ध्यान आकर्षित करने के लिए युधिष्ठिर ने जवाब दिया, " गुरुदेव मुझे चिड़िया दिखाई दे रही है । टहनी दिखाई दे रही है । अन्य टहनियों पर बैठी चिड़ियाऐं भी मुझे दिखाई दे रही हैं । इसके अलावा मुझे नदी और उसका किनारा, पेड़, आकाश, बादल और सूर्य भी दिखाई दे रहे हैं ।"

द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर को रोकते हुए कहा, "अपना धनुष नीचे कर लो युधिष्ठिर, क्योंकि तुम चिड़िया की आंख को नहीं भेद पाओगे ।" गुरुदेव की बात सुनकर युधिष्ठिर आश्चर्यचकित रह गए । इसके बाद द्रोणाचार्य ने एक के बाद एक अन्य राजकुमारों को बुलाना शुरू कर दिया ।

जब राजकुमार तीर चलाने को तैयार हो जाते तो वे सभी राजकुमारों से युधिष्ठिर से पूछे गए प्रश्न ही पूछते और सभी राजकुमारों को जो भी दिखाई देता, वो अपने गुरुदेव को बताते । इसके बाद द्रोणाचार्य उन्हें तीर वापस रखने को कहते और साथ ही यह भी कहते कि वे कभी चिड़िया की आंख को भेद नहीं पाएंगे ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कुछ समय बाद अर्जुन की बारी आई और वो तीर धनुष पर चढ़ा कर तैयार हो गया । इस बार भी गुरु द्रोणाचार्य ने उनसे भी वही सवाल किया जो युधिष्ठिर सहित अन्य राजकुमारो से पूछा था । उन्होंने पूछा, "मुझे बताओ अर्जुन तुम्हें क्या दिखाई दे रहा है ?" तीर चलाने को तैयार अर्जुन ने जवाब दिया, "गुरुदेव मुझे चिड़िया की आंख दिखाई दे रही है ।"

द्रोणाचार्य ने फिर पूछा, "क्या तुम्हें दूसरी चिड़िया, पेड़ या बादल दिखाई नहीं दे रहे हैं ?" अर्जुन ने जवाब दिया, "नहीं गुरुदेव मुझे चिड़िया की आंख के अलावा कुछ भी दिखाई नही दे रहा है ।"

द्रोणाचार्य ने मुस्कराते हुए कहा, "तीर चलाओ ।"

अर्जुन ने तीर छोड़ा । तीर निशाने पर लगा था । लकड़ी की चिड़िया जमीन पर गिर गई । सभी राजकुमार आश्चर्य से अर्जुन की तरफ देखने लगे । तीर ने चिड़िया की आंखें भेद दी थी ।

द्रोणाचार्य प्रसन्न थे । उन्होंने अपने सभी शिष्यों पर नजर डाली । सभी सबक समझ चुके थे और धीरे-धीरे अपने सिर हिलाने लगे ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

द्रोणाचार्य इस बात को लेकर खुश थे कि उनके पसंदीदा शिष्यों में से एक ने सफलता पूर्वक उनकी परीक्षा पास की । उन्होंने अर्जुन की पीठ थपथपाते हुए कहा, "युवा राजकुमार, सफलता पाने के लिए एकाग्रता की शक्ति जरूरी है ।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

एकलव्य

द्रोणाचार्य आश्रम, जहां पांडवों और कौरवों को विभिन्न प्रकार की शिक्षा और दीक्षा दी जा रही थी, के निकट में ही एक छोटा लड़का रहता था। उसका नाम एकलव्य था। एकलव्य बहुत ही प्रतिभाशाली था। वह उच्च कोटि की तीरंदाजी सीखने को उत्सुक था। उसकी इच्छा थी कि वह भी द्रोणाचार्य से तीरंदाजी की शिक्षा प्राप्त करे। वह नीची जाति का था, जिसे शूद्र कहा जाता था ,जिसके कारण उसकी मां ने उसे चेतावनी दी थी कि गुरु द्रोणाचार्य उसे कभी अपने शिष्य के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए वह ऊचें सपने नहीं देखे। लेकिन एकलव्य का संकल्प दृढ़ था। उसने कहा , "मैंने आचार्य द्रोण को ही अपना गुरु माना है। मैं उनके अलावा किसी और से तीरंदाजी नहीं सीखूंगा।" इसके बाद एकलव्य ने आचार्य द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाई और उसकी अपने गुरु के तौर पर पुजा करने लगा। प्रतिदिन आचार्य द्रोणाचार्य की मूर्ति के आगे फूल और धूप जलाकर एकलव्य तीरंदाजी का अभ्यास करने लगा।

प्रतिभावान एकलव्य जल्द ही तीरंदाजी सीख गया। एक दिन द्रोणाचार्य अपने शिष्य अर्जुन के साथ दोपहर के समय आश्रम के आंगन में तीरंदाजी का अभ्यास कर रहे थे। वह एक खुशनुमा दोपहर थी। द्रोणाचार्य के पास एक कुत्ता था जो हमेशा उनके आसपास मंडराता रहता था। अभ्यास के दौरान वह कुत्ता भटकता हुआ एकलव्य की झोपड़ी के पास पहुंच गया। तीरंदाजी का अभ्यास कर रहे एकलव्य को देखकर कुत्ता भौंकने लगा। कुत्ते के भौंकने से एकलव्य की एकाग्रता भंग होने लगी और तंग आकर उसने कुत्ते को चोट लगाए बिना उसके मुंह को तीरों से बंद कर दिया। इससे कुत्ते का कुछ देर तक भौंकना बंद हो गया और वह सहायता के लिए अपने मालिक द्रोणाचार्य के पास भाग आया। द्रोणाचार्य ने जैसे ही अपने कुत्ते की हालत देखी, तो वे आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने मन ही मन सोचा, "केवल बेहतरीन प्रशिक्षित तीरंदाज ही यह काम कर सकता है। जहां मैं जानता हूं, अर्जुन ही इसमें सक्षम है। मुझे जरूर ही यह देखना चाहिए कि अर्जुन के अलावा दूसरा और कौन है?" इसके बाद द्रोणाचार्य ने अपने कुत्ते से कहा कि वो उन्हें उस व्यक्ति के पास लेकर जाए, जिसमे उसकी ये हालत की है। कुत्ता आचार्य द्रोणाचार्य और अर्जुन लेकर एकलव्य की झोपड़ी पर पहुंचा, जहां एकलव्य तीरंदाजी का अभ्यास कर रहा था। द्रोणाचार्य एकलव्य की प्रतिभा देखकर भौंचक्के रह गए। वे एकलव्य के पास पहुंचे और उसने पूछा, "युवक तुमने ये बेहतरीन तीरंदाजी कहां से सीखी है, तुम्हारे गुरु कौन हैं?"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

द्रोणाचार्य को अपने सामने देखकर प्रफुल्लित एकलव्य ने कहा, "गुरुदेव यह आपकी ही कृपा है। मैं गुरु के रूप में आपकी ही पूजा करता हूं और मैंने एक गुरु के तौर पर आपकी मूर्ति की स्थापना की है। हे गुरुदेव, मुझे आशीर्वाद दें कि मैं एक दिन बड़ा धनुर्धर बन सकूं।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

द्रोणाचार्य एकलव्य का समर्पण देखकर भौंचक्के रह गए। लेकिन वे डर गए कि कही एकलव्य उनके प्रिय शिष्य अर्जुन से बड़ा तीरंदाज न बन जाए । उन्होंने एकलव्य को जवाब दिया, "मैं तुम्हें आशीर्वाद तो दूंगा वत्स, लेकिन पहले ये बताओ कि मुझे गुरुदक्षिणा में तुम क्या दोगे?"

एकलव्य यह सुन अभिभूत हो गया कि गुरु द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य के रूप में स्वीकार कर लिया है। उसने कहा, "आप मेरे गुरु बनने के लिए सहमत हो गए हैं, इससे मैं धन्य हूं। गुरुदेव आप जो भी मांगेंगे, आपका यह कृतज्ञ छात्र आपकी हर आज्ञा को स्वीकार करेगा।"

गुरु द्रोणाचार्य ने कहा, "वस्त, मैं तुम्हारा यह समर्पण देखकर चकित हूं। मुझे गुरु दक्षिणा में तुम्हार बाएं हाथ का अंगूठा चाहिए?"

चारों ओर चल रही पवन स्तब्ध रह गई और चारों ओर के वृक्ष मानों ठगे से खड़े रह गए। यहां तक कि अपने गुरु की यह लगभग असामन्य और क्रूर मांग सुनकर अर्जुन भी दंग रह गया। एक तीरंदाज से अंगूठा मांगना, उसकी प्रतिभा को मारने के बराबर था। अंगूठे के

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

बिना एकलव्य तीरंदाजी में सक्षम नहीं रह पाता। गुरु द्रोणाचार्य ने अपने एक शिष्य से अंगूठे की मांग, दूसरे प्रिय शिष्य के सम्मान की रक्षा के लिए की थी।

लेकिन एकलव्य ने बिना देरी और विरोध किए कमर में से चाकू निकाला और अपने बाएं हाथ का अंगूठा काट दिया और अंगूठे को गुरु द्रोणाचार्य के पैरों में रखकर सम्मानपूर्वक झुक गया। स्वर्ग के देवताओं ने एकलव्य के इस बलिदान की प्रशंसा की। इस तरह से एकलव्य का इतना प्यार और सम्मान अपने गुरु के लिए था।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कठोर शपथ

एक बार भगवान इंद्र की सहायता से अष्ट वसु यानि कि आठ देवताओं ने दिव्य गाय कामधेनु के चुराने का षडयंत्र रचा। लेकिन उन सभी को महर्षि वशिष्ठ ने पकड़ लिया और उन्हे मनुष्य के रूप में धरती पर जन्म लेने का शाप दिया। यह सुनकर आठों देवता वशिष्ठ से क्षमा मांगने लगे। यह सुनकर महर्षि वशिष्ठ ने कहा, "मैं अपना शाप तो नहीं ले सकता, लेकिन आप सभी में से सात मनुष्य जीवन में ज्यादा समय नहीं गुजार पाएंगे, क्योंकि जैसे ही आपका जन्म होगा, वैसे ही आपकी मां आप सबको मार डालेगी।" लेकिन प्रबाश, क्योंकि आपने इन सभी देवताओं को कामधेनु के चुराने के लिए उकसाया था, इसलिए आपको मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर लंबा समय गुजारना होगा। शाप की वजह से आठो देवताओं का जन्म देवी गंगा और हस्तिनापुर के महान राजा शांतनु के घर हुआ था।

एक बार जब महाराजा शांतनु शिकार की तलाश में घोड़े पर सवार होकर गंगा के किनारे से गुजर रहे थे, तो अचानक उन्होंने एक बहुत सुंदर महिला को देखा। महिला की खूबसूरती से प्रभावित शांतनु ने उससे पूछा, "आप कौन हैं?" महिला ने जवाब दिया, "मैं गंगा हूं।" राजा ने गंगा से विवाह करने का आग्रह किया, तो गंगा ने कहा कि वह उनसे तभी विवाह करेगी जब वे उसकी शर्तों को मानेंगे।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राजा उसकी शर्तों को मानने के लिए तैयार हो गये, तो गंगा ने कहा, "मुझे वचन दीजिए कि मैं क्या कर रही हूं, क्यों कर रही हूं, आप मुझसे कभी कारण नहीं पूछेंगे, नहीं तो मैं उसी दिन आपको छोड़कर चली जाऊंगी।"

राजा शांतनु ने उन्हें इसके लिए वचन दे दिया और धूमधाम से विवाह के बाद गंगा शांतनु की पत्नी बन गई। विवाह के बाद काफी दिनों तक दोनों ने खुशहाल जीवन व्यतीत किया। एक दिन गंगा ने एक बालक को जन्म दिया। राजा शांतनु बहुत खुश हुए, लेकिन एक रात को गंगा ने अपने पुत्र को नदी में बहा दिया। राजा शांतनु ने उसे ऐसा करते हुए देखा, लेकिन उन्हें गंगा से किया हुआ वो वचन याद आ गया, जिसमें उन्होंने कोई सवाल या कारण नहीं पूछने के बारे में वचन दिया था, इसलिए वो उससे कुछ नहीं पूछ सके। गंगा इसी प्रकार गंगा बच्चे को जन्म देती और उसे गंगा नदी में बहा देती। गंगा के इस काम से राजा शांतनु बहुत उदास थे। लेकिन इस अजीब काम के बारे में कुछ पूछ भी नहीं सकते थे।

इस तरह गंगा ने एक एक कर अपने सात बेटों को नदी में डुबा दिया। एक दिन जब गंगा अपने आठवें पुत्र को लेकर नदी की ओर जा रही थी, तो राजा शांतनु से रहा नहीं गया और

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

वे गंगा का पीछा करते हुए नदी के किनारे तक पहुंच गए और जैसे ही गंगा अपने आठवें पुत्र को नदी में डुबोना चाहा, राजा शांतनु ने उसे रोक दिया और कहा, "मेरे पुत्र को मत बहाओ, मैं बहुत समय तक चुप रहा लेकिन मैं अब तुम्हें इस तरह से अपने बेटे को मारते हुए नहीं देख सकता।"

पर उनको आश्चर्यचकित करते हुए गंगा ने कहा, "राजन मैंने अपने जिन सात पुत्रों को मारा था, वे सभी देवता थे और वे महर्षि वशिष्ठ द्वारा शापित थे। मैंने उन्हें इसलिए मारा ताकि वो अपने शाप से मुक्त हो सकें, लेकिन आपने अपना दिया वचन तोड़ा है, इसीलिए अब मुझे जाना होगा। मैं अपने इस बेटे को लेकर जा रही हूं। जब ये बड़ा हो जाएगा, तब आपके पास लौट आएगा।" यह कहकर गंगा बच्चे के साथ नदी में गायब हो गई।

राजा शांतनु बहुत वर्षों तक तक दुखी होकर जीवन जीते रहे। एक दिन उन्होंने देखा कि एक सुंदर बालक नदी के किनारे खड़ा होकर तीरंदाजी का अभ्यास कर रहा है। उन्होंने बालक से पूछा, "कौन हो तुम?" बालक ने जवाब दिया, "मैं गंगा पुत्र हूं।"

राजा शांतनु उसे लेकर अपने महल लौट आए और उसका नाम उन्होंने देवव्रत रखा। देवव्रत को अच्छी शिक्षा और दीक्षा दी गई। महर्षि वशिष्ठ ने उन्हें वेद का ज्ञान दिया। गुरु शुक्राचार्य और बृहस्पति ने जहां उन्हें राजनीति सिखाई, वहीं परशुराम ने उन्हें तीरंदाजी सिखाई।

एक दिन राजा शांतनु जब यमुना नदी के किनारे घूम रहे थे, तो उन्होंने एक सुंदर युवती को देखा। युवती का नाम सत्यवती था और वो एक मछुआरे की बेटी थी। जब राजा शांतनु मछुआरे के पास उसकी बेटी से विवाह करने का प्रस्ताव लेकर गये, तो उसने मना कर दिया। मछुआरे ने कहा, "हे राजन, मेरी बेटी के पुत्र को राजसिंहासन मिलेगा। अगर आप मुझे ये वचन दें कि देवव्रत आपके बाद राजा नहीं बनेगा, तभी मैं अपनी बेटी का विवाह आपसे कर सकता हूं।" शांतनु पर अपने बेटे देवव्रत की ज़िम्मेदारी थी, इसलिए उन्होंने मछुआरे की शर्तों को मनाने से इंकार कर दिया। घटना से बेहद दुखी राजा शांतनु वापस लौटकर महल में आ गए।

देवव्रत को दरबारियों से पता चला कि राजा सत्यवती से शादी करना चाहते थे, लेकिन न मानने की वजह से उसके पिता ने मना कर दिया। यह सुनकर देवव्रत सत्यवती के पिता के पास पहुंचे और कहा, "मैं आपसे वादा करता हूं कि मैं कभी राजगद्दी नहीं मांगूगा। सत्यवती के बच्चे ही राजगद्दी के वारिस बनेंगे और शासन करेंगे।"

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

इसके बाद मछुआरे ने कहा, "अगर मेरा नाती शासन करने के योग्य नहीं हुआ तो?"

देवव्रत ने कहा, "...तो मैं वचन देता हूं कि मैं उन्हें शासन करने मे मदद करूंगा और जो भी राजगद्दी पर बैठेगा, मैं उसकी सेवा करूंगा।"

मछुआरे ने कहा," अगर आप राजगद्दी पर नहीं बैठेंगे, तो भी आपके बच्चे सिंहासन के लिए मेरे नाती के बच्चों से लड़ाई करेंगे।"

इस पर देवव्रत ने कहा, "चिंता न करें, मैं शपथ लेता हूं कि मैं कभी विवाह नहीं करूंगा।" देवव्रत के द्वारा यह शपथ लेने के बाद मछुआरा अपनी पुत्री का विवाह राजा शांतनु से करने के लिए तैयार हो गया। राजा शांतनु ने जब यह सुना, तो वे देवव्रत की निष्ठा देखकर मुग्ध हो गये। उन्होंने देवव्रत को इच्छामृत्यु का वरदान देते हुए कहा कि वो जब तक चाहेगा तब तक जीवित रहेगा। सत्यवती के पिता को दिए वचन के लिए कालांतर में लोग उन्हें "भीष्म" के नाम से जानने लगे। दारअसल "भीष्म" का शाब्दिक अर्थ "कठोर शपथ" होता है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र में लड़ी जाने वाली लड़ाई के दौरान भीष्म कौरव की सेना के सर्वोच्च सेनापति बने। आज भी उनका उदाहरण भक्ति, निष्ठा और महान बलिदान के लिए दिया जाता है।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

राजा हरीशचन्द्र

बहुत समय पहले अयोध्या में हरीशचन्द्र नामक राजा शासन करते थे। उनकी पत्नी तारामती थीं और एक पुत्र, जिसका नाम रोहित था। राजा बुध्दिमानी पूर्ण शासन करते थे और प्रजा पर ध्यान देने के कारण प्रजा भी उनसे प्रेम करती थी।

अक्सर लोग उनकी उदारता का उल्लेख किया करते थे। जब भी कोई अपनी इच्छा लेकर उनके पास गया तो उन्होंने कभी मुंह नही मोड़ा। एक दिन ऋषि विश्वामित्र उनके दरबार में आए थे। राजा अपने सिंहासन से नीचे उतरकर महान ऋषि के आगे नतमस्तक हो गए। ऋषि विश्वामित्र ने कहा, "महाराज, मैंने सुना है कि यदि आप के पास कोई कुछ मांगने आता है तो आप किसी को वापस नहीं करते हैं। क्या आप मेरी इच्छा को पूरा करने के लिए कुछ भी बलिदान करने को तैयार हैं?" राजा ने कहा, "मैं कुछ भी बलिदान करने को तैयार हूं।" तब विश्वामित्र ने कहा, "दक्षिणा के रूप में आप मुझे अपना राज्य दे दीजिए। क्या आप मुझे यह दे देंगे?" राजा ने एक बार फिर विश्वामित्र के सामने सिर झुकाया और कहा, "हां प्रभु, यह सब अब आपका है। मैं अपनी पत्नी और बेटे के साथ आज ही महल छोड़ दूंगा।"

परन्तु विश्वामित्र संतुष्ट नही हुए थे। उन्होंने कहा, "इस दक्षिणा को और भी प्रभावी बनाने के लिए आपको मुझे कुछ धन भी देना होगा।" राजा हरीशचन्द्र ने अपनी पत्नी और अपने पुत्र को एक ब्राह्मण को बेच दिया, जिसने उन्हे एक दास के रूप में इस्तेमाल किया। राजा ने खुद को श्मशान के चौकीदार को बेच दिया था।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

दिन बीतते गए। रानी तारामती और उनका पुत्र रोहित दास के रूप में ब्राह्मण के घर में सेवा करने लगे। एक दिन जब रोहित बगीचे में फूल तोड़ने गया, तब उसे एक सांप ने काट लिया। रोहित की तुरंत मृत्यु हो गई। जब उसकी मां को यह समाचार मिला, तो वह उसके लिए शोक करने लगी। अन्तिम क्रियाकर्म के लिए वह उसे श्मशान ले गई। लेकिन उसके पास पैसे नहीं थे। जब श्मशान के चौकीदार के नौकर ने उससे कर देने के लिए कहा, तो उसने अपनी आंखे नीची कर ली और चुपचाप खड़ी हो गई। तारामती इस बात से अनजान थी कि चौकीदार का नौकर कोई और नहीं, उनका पति ही है। हरीशचन्द्र भी अपनी पत्नी को नही पहचान पाए थे।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

उसने कहा, "यदि तुम्हारे पास कर चुकाने के लिए पैसे नहीं हैं, तो तुम अपना मगंलसूत्र क्यों नही बेच देती हो?" रानी के पास एक वरदान था कि उसके पति के अलावा और कोई उसके मगंलसूत्र को नही देख पाएगा। जैसे ही हरीशचन्द्र ने यह कहा, तारामती को पता चल गया कि वह उनके ही पति थे। उसने हरीशचन्द्र को उनके पुत्र के मृत्यु के बारे में बताया। तारामती के पास उसकी साड़ी के अलावा और कुछ नही था। उसने आधी साड़ी से अपने पुत्र के शरीर को ढका और आधी साड़ी कर के रूप में अपने पति को दे दी।

यह देखकर सभी देवता स्वर्ग से उतर आए और उन्हें आशीर्वाद दिया। भगवान विष्णु ने रोहित की ज़िंदगी लौटा दी और कहा, "हे महान राजा, हम आपकी परीक्षा ले रहे थे हम सब आपके द्वारा किये गए कार्यो से बहुत प्रभावित हुए हैं। हम आपका राज्य आपको लौटा रहे हैं और अब आप स्वर्ग जा सकते हैं।" हरीशचन्द्र ने कहा कि वह ऐसा नहीं कर सकते, क्योंकि वह अभी भी अपने चौकीदार मालिक के नौकर हैं।

देवताओं ने उसे बताया कि वह चौकीदार कोई और नहीं बल्कि भगवान यम हैं। तब हरीशचन्द्र ने कहा, "एक राजा होने के नाते मैं अपने लोगों को छोड़कर स्वर्ग में कैसे जा सकता हूं?" देवताओं ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि स्वर्ग जाना तो इनके कर्म पर निर्भर करता है।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

तब राजा ने कहा, "इस मामले में, मैं अपने पुण्य और धार्मिकता को छोड़ दूंगा ताकी मेरी जगह मेरे लोग स्वर्ग को जा सकें।" सभी देवतागण हरीशचन्द्र के आचरण से बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने राजा हरीशचन्द्र और उसकी प्रजा के सभी लोगों को मृत्यु के बाद स्वर्ग जाने की अनुमति दे दी।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

सागर का मंथन

ऋषि दुर्वासा एक शक्तिशाली ऋषि थे । हालांकि वह महाज्ञानी थे, परन्तु उन्हें गुस्सा जल्दी आ जाता था । एक बार भगवान इंद्र अन्य सभी देवताओं के साथ अपने हाथी पर बैठकर पृथ्वी के चारों ओर यात्रा कर रहे थे । वह सभी दुर्वासा ऋषि के आश्रम में पहुंचे। ऋषि ने भगवान इंद्र को फूलों की एक विशेष माला भेंट की । भगवान इंद्र ने वह माला अपने हाथी के सूंड़ में यह सोचकर डाल दी कि वह उस माला को अपने गले में डाल लेगा, लेकिन उस शरारती हाथी ने माला जमीन पर फेंक दी ।

उसकी इस हरकत ने दुर्वासा ऋषि को क्रोधित कर दिया । ऋषि ने कहा, "मुझे इस तरह अपमानित करने कि आपने हिम्मत कैसे की ? इसके लिए मैं आपको और अन्य देवताओ को यह श्राप देता हूं कि आप सभी अपनी वैभव और शक्तियां खो देंगे ।"

उनके शाप के प्रभाव से शक्तिहीन देवों के लिए कुछ दिनों बाद दैत्य और असुर मुसीबत बन गए । अंत में परेशानियों से थककर शक्तिविहीन देवता भगवान विष्णु के पास गए और अपनी समस्याओं के बारे में बताया । उन्होंने कहा, "प्रभु, हमारी मदद करें । अगर यह लगातार जारी रहा, तो शीघ्र हम सब, दैत्य और असुरों द्वारा मार डाले जाएंगे ।"

भगवान विष्णु ने कहा, "आप सभी को मिलकर समुद्र मंथन करना चाहिए । उस मंथन से निकले हुए अमृत से ही आप सभी अपनी शक्तियों को पुनः प्राप्त कर सकेंगे। परन्तु इस कार्य के लिए आप सभी को दैत्य और असुरों की मदद भी लेनी पड़ेगी।" तब भगवान इंद्र, दैत्यों के राजा दैत्यराज बाली के पास गए। उन्होंने कहा, "दैत्यराज, भगवान विष्णु के आशीर्वाद से हमें समुद्र का मंथन करना चाहिए । इस प्रक्रिया सें समुद्र से रत्न निकलेंगे, जिन्हें मैं आपके साथ बांटने का वादा करता हूं ।"

असुर और दैत्य लालची थे । इसलिए वह समुद्र मंथन मे देवताओं की मदद करने को तैयार हो गए । एक सभा आयोजित की गई, जिसमें यह तय किया गया कि मन्द्राचल पर्वत एक मथनी के तौर पर इस्तेमाल किया जायेगा और सांपों के राजा नागराज वासुकी को पर्वतनुमा मथनी की रस्सी बना कर पर्वत के चारों ओर लपेटकर दोनों पक्षों की ओर से खींचा जाएगा ।

कुछ देवता और असुर मन्द्राचल पर्वत लाने के लिए गए। लेकिन पर्वत इतना भरी था कि वह सब उसे स्थानांतरित करने में असमर्थ थे। उन सब की बहुत कोशिशों के बावजूद कोई

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

फर्क नहीं पड़ रहा था और वह असफल हो रहे थे । इसलिए सभी भगवान विष्णु के पास गए और उनसे मदद की भीख मांगी ।

भगवान विष्णु गरुड़ पर सवार होकर गए और उन्होंने सिर्फ अपने दाएं हाथ से पर्वत उठा लिया । फिर वह उसे समुद्र में नीचे ले गये ।

सबसे पहले हलाहल जहर वासुकी के मुख से निकाला । यह जहर पृथ्वी पर फैलने लगा और कई पौधों और निर्दोष पशुओं को मारने लगा । असुर एंव दैत्य या देवतागण इस जहर को लेने को तैयार नहीं थे, वह सभी मदद के लिए भगवान शिव के पास गए । भगवान शिव ने जहर पीकर अपने कंठ (गला) में एकत्रित कर था । उनकी मृत्यु नहीं हुई क्योंकि वह बहुत ही शक्तिशाली थे। परन्तु जहर के कारण उनका कंठ नीले रंग में बदल गया । यही कारण है कि भगवान शिव को नीलकंठ या नीले कंठ वाला भी कहा जाता है ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

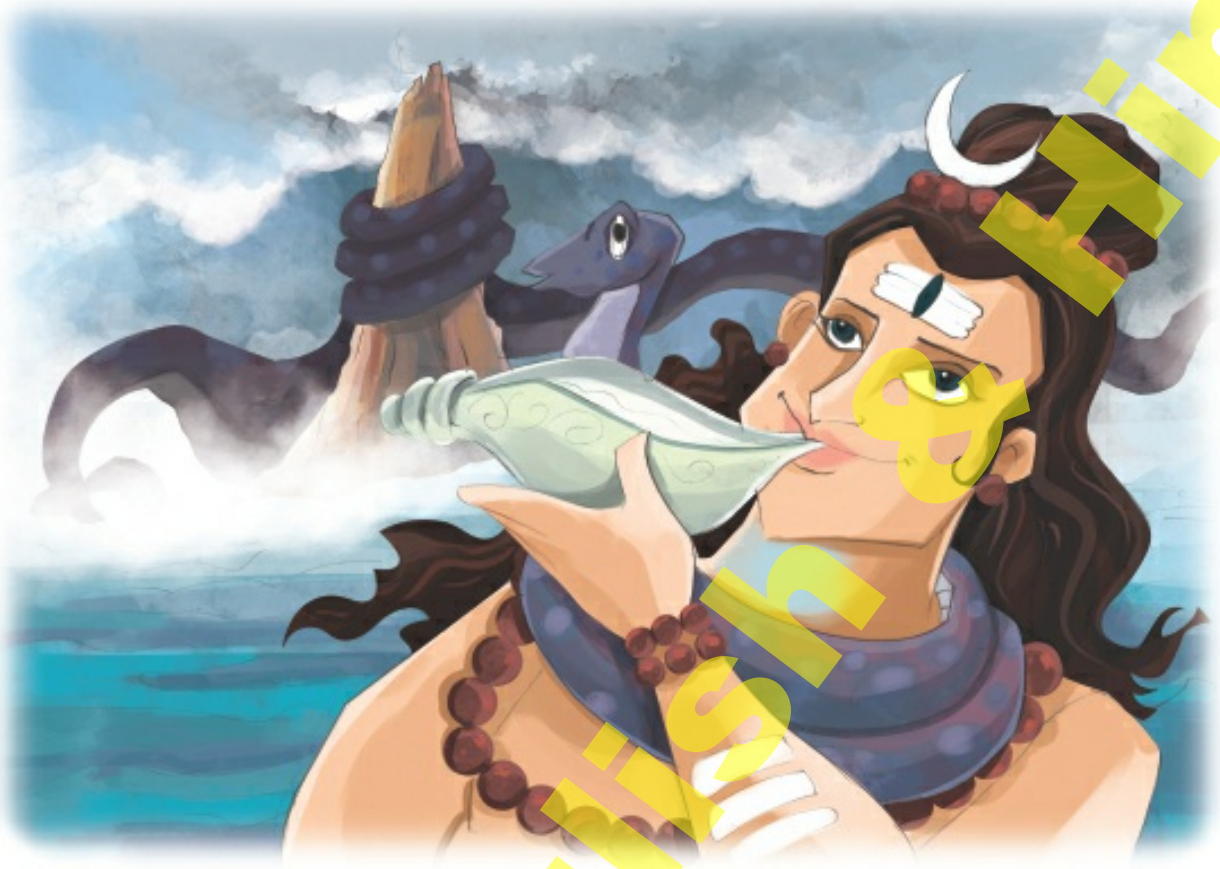

हलाहल के निकलने के बाद भी मंथन जारी रखा गया । तब कामधेनु नामक दिव्य गाय बाहर आयी । भगवान विष्णु द्वारा यह गाय उपहार स्वरूप ऋषियों को दे दी गई । फिर उस मंथन में एक घोड़ा दिखाई दिया । यह उच्चाश्रव कहलाया । दैत्यों के राजा दैत्यराज ने इसे अपने लिए रख लिया । उसके बाद चार दांतों वाला सर्फद हाथी निकला । यह एरावत कहलाया और भगवान इंद्र ने इस पर दावा कर दिया था । पांचवें उपहार के फलस्वरूप कृतभमनी गुलाब समुद्र से बाहर आया, जो दुनिया का सबसे मूल्यवान गहना था । मंथन में मदद के बदले भगवान विष्णु ने खुद इसे अपने लिए रख लिया था ।

कुछ समय के बाद पारिजात नामक पेड़ समुद्र से बाहर आया । उस समय इसे समुद्र के किनारे पर रख दिया था । बाद में देवता इसे अपने साथ स्वर्ग ले गए । उसके बाद रम्भा नामक एक सुंदर युवती प्रकट हुई और उसने खुद निर्णय लिया कि वह आंशिक रूप से धरती और आंशिक रूप से स्वर्ग में रहेगी ।

मंथन को जारी रखा गया और उसके बाद धन की देवी लक्ष्मी प्रकट हुई थीं । असुर और देवता दोनों ने ही उनके लिए आपस में लड़ना शुरू कर दिया था । लेकिन भगवान विष्णु ने कहा, "देवी, आप खुद निर्णय लीजिए कि आप किसके साथ रहना चाहती हैं ।" देवी लक्ष्मी ने कहा " न तो असुरों के साथ और न ही देवताओं के साथ, यदि आप मुझे रखते हैं, तो मैं

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

आप की पत्नी बनकर आपके साथ रहना चाहती हूं ।" इसलिए भगवान विष्णु ने देवी लक्ष्मी को अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया । उसके बाद वारुणी नामक मदिरा निकली, जिसे असुरों ने सहर्ष स्वीकार कर लिया था । आखिर में देवताओं के चिकित्सक धनवन्तरी अपने हाथों में अमरता का अमृत लिए उत्पन्न हुए। सभी दैत्य, असुरों और देवताओं में लड़ाई शुरू हो गई कि किसे अमृत का बड़ा हिस्सा मिलेगा । जैसे ही उन्होंने लड़ना शुरू किया, वैसे ही कुछ असुरों ने अमृत की सुराही को पकड़कर भागना शुरू कर दिया । इस प्रकार का भ्रम देखकर भगवान विष्णु ने उनकी मदद करने का निश्चय किया और वह मोहिनी नामक सुंदर अप्सरा में बदल गए ।

Novels English & Hindi

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

Novels English & Hindi

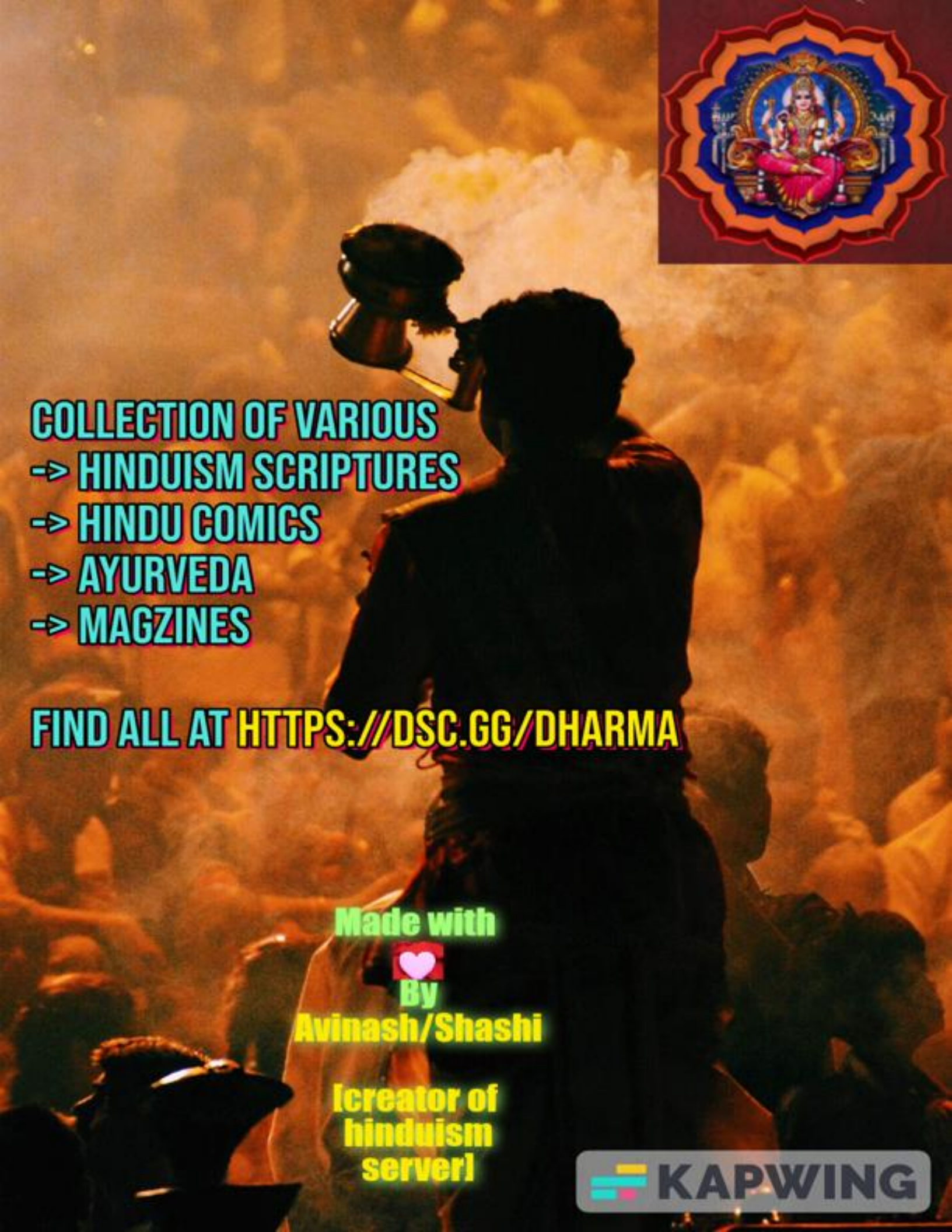
COLLECTION OF VARIOUS
-> HINDUISM SCRIPTURES
-> HINDU COMICS
-> AYURVEDA
-> MAGZINES
FIND ALL AT HTTPS://DSC.GG/DHARMA
Made with
By
Avinash/Shashi
[creator of
hinduism
server]
KAPWING

https://rb.gy/zxhwdo
https://t.me/indianmythologybooks

कहानियों द्वारा बच्चों का बौद्धिक और चारित्रिक निर्माण हो यही इस पुस्तक की प्रेरणास्रोत है। प्राचीन काल में संयुक्त परिवार में दादा–दादी, नाना–नानी बच्चों का कहानियों के माध्यम से चारित्रिक, संस्कारिक निर्माण करते थे। परंतु आजकल एकल परिवार समय के अभाव में अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

हमारे प्रकाशन का प्रयास है कि अभिभावक अपने बच्चों को सुसंस्कारित, चरित्रवान और योग्य नागरिक बना सकें एवं बच्चे भी इस पुस्तक को पढ़कर लाभान्वित हों।

इस पुस्तक में हमने प्रसिद्ध भारतीय पौराणिक कथाओं को संग्रहित किया है। यह कहानियां त्याग, बलिदान, बुराई पर भलाई की जीत आदि पर आधारित हैं।

इन कहानियों द्वारा बच्चों को नैतिकता और सदाचार की सीख मिलती है।

www.maplepress.co.in

Maple Press

children

ISBN: 978-93-5033-916-9

₹ 80

9 789350 339169

Novels English & Hindi